HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI NO. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

कार्तिक-मार्गशीर्ष, युगाब्द 5122, अक्तूबर 2020

नशे में उड़ता बॉलीवुड

मूल्य 20/- प्रति

पर्यावरण संरक्षण एवं सेवा कार्यों की एक झलक

मातृवन्दना संस्थान का प्रकाशन

मातृवन्दना

वर्ष: 20 अंक : 10 | कार्तिक-मार्गशीर्ष कलियुगाब्द 5122, अक्तूबर 2020

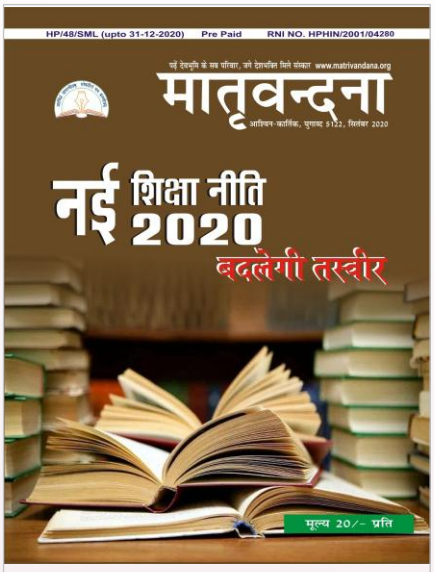

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

मीनाक्षी सूद
डॉ. अर्चना गुलेरिया
डॉ. उमेश मौदगिल
डॉ. जय कर्ण

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस
शिमला, हि.प्र., दूरभाष : 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com
Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक : कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 367, फेज-9, उद्योग क्षेत्र मोहाली, एस.ए.एस. नगर से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 से प्रकाशित। संपादक : डॉ. दयानंद शर्मा

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	नशे के आगोश में जकड़ती...	5
चिन्तन	जिंदगी से कला जोड़ो नशा नहीं	6
प्रेरक प्रसंग	प्रसिद्ध आरती ओउम जय जगदीश	7
आवरण	छेदों से छलनी हुई थाली	8
देश प्रदेश	शक्तिपीठों के दर्शन को अब घर बैठे	11
देवभूमि	शिरगुल देवता की जन्मस्थली शाया	15
घूमती कलम	इस्लामिक जिहादियों का अंतरराष्ट्रीय...	17
पुण्य जयंती	दत्तोपंत ठेंगड़ी : एक श्रेष्ठ चिंतक	19
स्वास्थ्य जगत	दो दशकों से गरीब जरूरतमंदों...	20
कृषि जगत	प्राकृतिक विधि से सस्ता हुआ सेब	21
काव्य जगत	सैअर दी संग्राद	22
युवा पथ	कुल्लू का शरण गांव देश के चुनिंदा...	23
विश्व दर्शन	गोहत्या पर बैन लगाने की तैयारी...	24
समसामयिकी	बेरोजगार दलों का बेरोजगार दिवस	25
महिला जगत	महिलाओं पर यूएन आयोग का सदस्य...	27
प्रतिक्रिया	मौत में अपना अस्तित्व तलाशता...	28
विविध	प्यारा भारत देश हमारा	29
दृष्टि	कोरोना को निष्क्रिय कर सकता...	31
साईबर गड़गप		32
बाल जगत	कभी न बनाओ मजाक	33

पाठकीय...

सम्पादक महोदय,

स्वामी विवेकानंद के अनुसार मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के द्वारा न्याय संगत, न्यायपूर्ण, वैज्ञानिक, प्रगतिशील, प्रकृति सम्यक, समृद्धशाली, संवेदनशील, उच्च सांस्कृतिक मूल्यों युक्त समाज का निर्माण संभव है। अत: देश की शिक्षा नीति व शिक्षा व्यवस्था पर ही देश का भविष्य निर्भर रहता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 नई पीढ़ी का सर्वांगीण विकास करने व भारत को उन्नति के सर्वोच्च शिखर तक ले जाने की सार्थक पहल है। पिछली शिक्षा नीतियों का जोर मुख्य रूप से शिक्षा तक पहुँच के मुद्दों पर था, परंतु यह नीति विद्यार्थियों मे अंतर्निहित क्षमताओं के विकास पर जोर देती है। 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अधूरे कार्यों को इस शिक्षा नीति के द्वारा पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली है जो सभी को उच्चतर गुणवत्ता की शिक्षा उपलब्ध कराके भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर, एक जीवंत व न्यायसंगत, ज्ञान समाज में बनाने मे योगदान करेगी। किसी भी नीति की प्रभावशीलता इसके क्रियान्वयन पर ही निर्भर करती है। सरकार को चाहिए कि वे शिक्षा नीति का चरणबद्ध तरीके से क्रियान्वयन करे। सभी संबन्धित पक्षों यानि अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों व निजी क्षेत्र के शिक्षा व्यवसायियों से शिक्षा नीति के सिद्धांतों, उद्देश्यों व मूल भावनाओं की विस्तारपूर्वक चर्चा करें व उनके सुझावों को भी समाहित करे। सभी संबन्धित वर्ग राष्ट्रीय शिक्षा नीति को एक सरकारी नीति न समझ कर इसे अपने समाज व युवा पीढ़ी व राष्ट्र के उत्थान व विकास का दस्तावेज समझे। ◆◆◆

संजीव कुमार, एसिस्टेंट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान,
राजकीय महविद्यालय बिलासपुर

अपना मूल्यांकन करे बॉलीवुड

प्रणय कुमार

आज सिने कलाकारों को आत्मविश्लेषण करना चाहिए कि क्यों उनके सरोकारों पर सवाल उठाए जा रहे हैं?

सिनेमा प्रारंभ में जनसरोकारों एवं जनभावनाओं को लेकर चली। स्वाभाविक है कि उसे आशातीत सफलता एवं स्वीकार्यता मिली। कालांतर में जैसे-जैसे तकनीक विकसित होती गई, भव्यता, नवीनता, प्रयोगधर्मिता, कल्पनाशीलता का संचार हुआ। संवाद, संगीत, अभिनय का रुपहले पर्दे पर भव्य, जीवंत एवं सजीव चित्रण होता गया। सिनेमा और उससे जुड़े कलाकारों का दर्शकों पर जादू-सा असर होता चला गया। अपार यश, वैभव एवं लोकप्रियता के रथ पर सवार इन सिने कलाकारों को समाज ने न केवल सिर-माथे बिठाया, बल्कि महानायकत्व के तमाम विशेषणों से भी उन्हें विभूषित किया। ऐसी लोकप्रियता, प्रसिद्धि, समृद्धि अतिरिक्त सतर्कता, अनुशासन एवं संतुलन की अपेक्षा रखती है, अन्यथा यह सफलता व्यक्ति के सिर चढ़कर बोलने लगती है और दर्शकों के पुरुषार्थ एवं साधना से अर्जित-निर्मित छवि, मान, प्रतिष्ठा और पूँजी क्षणों में धराशायी हो जाती है। सिने जगत और उसके तमाम सितारों के साथ आज ऐसा ही कुछ होता दिख रहा है। समय आ गया है कि इन सिने कलाकारों को अपना ईमानदार मूल्यांकन एवं आत्मविश्लेषण करना चाहिए कि ऐसा क्या हुआ कि आज अचानक उनकी साख पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं, उनके सरोकारों पर सवाल उठाए जा रहे हैं?

क्या कंगना रनौट एवं रवि किशन द्वारा बॉलीवुड में ड्रग्स के चलन की उठाई गई बात सिने-जगत और उससे जुड़े कलाकारों को बदनाम करने जैसा सरलीकृत मुद्दा है? क्या जिस थाली में खाया, उसी में छेद करने जैसे भावात्मक मुहावरों को उछाल इतने गंभीर प्रश्नों से मुंह मोड़ा जा सकता है? क्या यह एक गंभीर समस्या के समाधान के प्रयास एवं पहल को खारिज करना नहीं है? ऐसे उतावले भरे एवं प्रतिक्रियात्मक निष्कर्षों से क्या आम जन में यह संदेश नहीं जाएगा कि दाल में अवश्य कुछ काला है? अच्छा तो यह रहता कि ड्रग्स के धंधे और सेवन में कुछ सितारों के लिप्त पाए जाने के आरोपों के बीच कुछ जिम्मेदार कलाकार सामने आकर समाज एवं व्यवस्था को आश्वस्त करते कि वे ड्रग माफियाओं के विरुद्ध छेड़े गए इस अभियान में आम जन के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर खड़े हैं।

सिने-जगत के स्थापित कलाकारों की जिम्मेदारी बड़ी है। युवा वर्ग पर इनका व्यापक प्रभाव है। वे उन्हें आदर्श मान उनका अनुसरण करते हैं। अतः इन कलाकारों का दायित्व बनता है कि वे इन आरोपों के बरक्स अपने जीवन और व्यवहार में बदलाव लाएं। निजता की ओट लेकर अपराध की श्रेणी में आने वाली आदतों एवं जीवनशैली का सुविधावादी बचाव न करें। उन्हें अपने जीवन के विरोधाभासों एवं विसंगतियों को दूर कर सर्व स्वीकृत जीवन-व्यवहार एवं आचरण आत्मसात करने का प्रयास करना चाहिए।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार है)

अक्टुबर 2020 कार्तिक-मार्गशीष माह के व्रत-त्यौहार

तिथि	दिन	व्रत/त्योहार
1	गुरुवार	पूर्णिमा व्रत
5	सोमवार	संकष्टी चतुर्थी
13	मंगलवार	परम एकादशी
14	बुधवार	प्रदोष व्रत
15	गुरुवार	मासिक शिवरात्रि
16	शुक्रवार	अमावस्या
17	शनिवार	शरद नवरात्रि
		तुला संक्रांति, घटस्थापना
21	बुधवार	कल्परम्भ
22	गुरुवार	नवपत्रिका पूजा
24	शनिवार	दुर्गा महा नवमी, अष्टमी
25	रविवार	दशहरा
26	सोमवार	दुर्गा विसर्जन
27	मंगलवार	पापांकुशा एकादशी
28	बुधवार	प्रदोष व्रत (शुक्ल)
31	शनिवार	अश्विन पूर्णिमा व्रत

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 7650000990

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को गांधी/शास्त्री जयंती, महाराजा अग्रसेन जयंती, विजयदशमी, भगवान वाल्मीकि जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (अक्टुबर)

गांधी/शास्त्री जयंती	2 अक्टुबर
वायु सेना दिवस	8 अक्टुबर
महाराजा अग्रसेन जयंती	17 अक्टुबर
शारदीय नवरात्र प्रारंभ	17 अक्टुबर
महाअष्टमी	24 अक्टुबर
विजयादशमी	25 अक्टुबर
एकादशी	26 अक्टुबर
भगवान वाल्मीकि जयंती	31 अक्टुबर
शरद पूर्णिमा	31 अक्टुबर

नशे के आगोश में जकड़ती सिमटती जिन्दगी

सभ्य समाज से ही सभ्यता एवं संस्कृति का उद्भव होता है। प्राचीन सभ्यताओं की ऐतिहासिकता एवं विशिष्टता का आज भी इसलिए स्मरण किया जाता है क्योंकि उन सभ्यताओं की संरचना में सभ्य समाज का योगदान था और आने वाली पीढ़ियों के लिए वे प्रेरणादायी थी। भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता आर्यावर्त अर्थात् अखण्ड भारत के अतिप्राचीन वैदिक काल, उत्तरवैदिक, पौराणिक एवं स्वर्णकाल से सतत जुड़ी हुई है। कर्म, न्याय, सत्य, अहिंसा, सदाचार, अनुशासन आदि जीवन मूल्यों तथा ज्ञान-विज्ञान एवं विविध कलाओं से वह पोषित है। सबसे महत्वपूर्ण पक्ष इसका नैतिक-आधार है और यह विश्व की पथ प्रदर्शक रही है। किन्तु आज सम्पूर्ण विश्व अपनी गौरवशाली प्राचीन सभ्यताओं का विस्मरण कर भौतिकता की अन्धी दौड़ में अपना नैतिक आधार खो चुका है, जीवन मूल्यों के प्रति उसकी आस्था उत्तरोतर घटती जा रही है। विश्व के प्रायः सभी देशों के नागरिक आधुनिकता के नाम पर इतने मोहग्रस्त हो चुके हैं कि अनेकों विकृत आदतों के दास बन चुके हैं। हम भारतवासी भी इससे अछूते नहीं। आधुनिक सभ्यता का एक अत्यन्त अनिष्टकारी लक्षण जो समाज में परिलक्षित हो रहा है, वह है नशीले पदार्थों का व्यापक उपयोग ऐसा भी कदाचित् नहीं कि विगत समय में नशीले पदार्थों का व्यापक उपयोग ऐसा भी भी कदाचित् नहीं कि विगत समय में नशीले पदार्थों का सेवन नहीं होता था, अवश्य होता था किन्तु सीमित रूप में गुप्तरूप में तथा किसी विशेष अवसर पर , क्योंकि समाज नशे को हेय दृष्टि से देखता था। प्रायः नशीले पदार्थों की लत अशिक्षित, निर्धन, श्रमिकवर्ग अथवा बहुत ही धनी मानी वर्ग मे ही देखी जाती थी किन्तु आज तो तथाकथित सभ्य एवं शिक्षित समाज में निम्नवर्ग से उच्चवर्ग तक अधिकांश लोग नशे के आदी हो चुके हैं।

मध्यम वर्ग या निम्न मध्यम वर्ग के नशेड़ी इसके क्रय-विक्रय में सलिप्त होकर ही इसका उपयोग कर सकते हैं। इसी कारण व्यापक स्तर पर ड्रग्स का काला-कारोबार करने वाले स्मगलरों का है। इन्होंने पर्याप्त धन देकर ऐसे मजबूर लोगों को अपने साथ मिला लिया है जो युवाओं में नशे की आदत डालते हैं।

हमारे महान् कलाकार स्टार, अभिनेता, अभिनेत्री, गायक, संगीतकार, गीतकार, छायाकार, कोरियोग्राफर तथा फिल्म इन्डस्ट्री से जुड़ी अन्य विधाओं के विशेषज्ञ निश्चय से देशवासियों को हर विकट परिस्थितियों में भी खुश रखने का प्रयास करते हैं। किन्तु आज उसी फिल्म इंडस्ट्री के कुछ कलाकारों में नशीले पदार्थों के सेवन एवं शारीरिक शोषण आदि के आरोप-प्रत्यारोप तथा आत्महत्या अन्यथा हत्या से जुड़ी खबरें इस विशिष्ट क्षेत्र के सम्मान को चोट पहुंचा रही है। एक नये उभरते स्टार अभिनेता सुशान्त राजपूत की आत्महत्या अथवा हत्या के पीछे 'ड्रग्स' को ही मुख्य कारण माना जा रहा है। हिमाचल की बेटी बॉलीवुड की स्टार अभिनेत्री कंगना रणौत ने इस आत्महत्या पर अपनी प्रतिक्रिया क्या जाहिर की कि महाराष्ट्र सरकार ने मुम्बई स्थित उसके बहुत ही सुन्दर एवं मंहगे कार्यालय को अवैध निर्माण का आरोप लगाकर तुड़वा दिया। शिवसेना और बॉलीवुड के कुछ बड़े कलाकारों के ताल-मेल से कौन परिचित नहीं। हिमाचल प्रदेश की वीरांगना चुप बैठने वाली नहीं, वही अभी भी प्रतिरोध पर उतारू हैं और दिशा अभिनेत्री और अभिनेता सुशान्त राजपूत की आत्महत्या को एक बड़ी साजिश का हिस्सा बता रही है। इधर दूसरी ओर सीबीआई, नारकोटिक ब्यूरो, ईडी जैसी एजेंसियां इस साजिश की तह तक पहुंचने वाली है। मीडिया अपने-आप में खोजी बना हुआ है।

हमारे प्रदेश में भी पिछले दशक से नशे का काला कारोबार और युवापीढ़ी में इसका उपयोग बढ़ता जा रहा है। स्कूल-कॉलेज तथा अन्य शिक्षा संस्थानों में नशीले खतरनाक पदार्थ जैसे चरस, गांजा, चिट्टा आदि का विद्यार्थी इस्तेमाल करने लगे हैं। पर्यटन स्थलों एवं परिवहन से जुड़े लोगों तथा हाइवे के साथ जुड़े ढाबों आदि में भी ये नशीले ड्रग्स आसानी से नशेड़ियों की पहुंच में हैं। इस दुर्व्यसन के कारण कई युवा काल के ग्रास बन चुके हैं। इस समाज एवं युवा-पीढ़ी के अभिभावकों को शीघ्र ही जागरूक होना पड़ेगा। मां-बाप को अपने किशोर एवं प्रशासन को नशे का कारोबार करने वालों से सख्ती से निपटना होगा। साथ ही विद्यार्थियों को नैतिकशिक्षा, योग, व्यायाम एवं शारीरिकश्रम की ओर जोड़ना होगा। इस कार्य में शिक्षकों को महत्वपूर्ण भूमिका वहन करनी होगी।

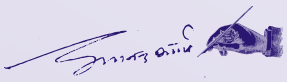

जिंदगी से कला जोड़ो नशा नहीं

... चेतन कौशल नूरपुरी

जीना भी एक कला है। जो युवा कलात्मक विधि से जीना सीख जाता है, वह मानो उसके लिए सोने पर सुहागा। कलात्मक विधि से जीने के लिए युवा का किसी न किसी कला के साथ जुड़े रहना अति आवश्यक है। इसके लिए युवा को मांस-मदिरा सेवन और धुम्रपान करने से सदैव दूर रहना चाहिए। इन वस्तुओं का सेवन करने से मानव जीवन में दुष्प्रभाव पड़ता है, तरह-तरह की विसंगतियां उत्पन्न होती हैं जो जीवन विकास के लिए बाधक होती हैं। वैसे भी सनातन धर्म इनका सेवन करने की किसी को आज्ञा नहीं देता है अपितु सावधान ही करता है।

किसी ने ठीक ही कहा है कि 'जिंदगी से कला जोड़ो, नशा नहीं।' जिंदगी में जब कोई भी व्यक्ति खाद्य पदार्थ या पेय रस का निर्धारित मात्र या आश्यकता से अधिक सेवन करता है तो उससे उसके शरीर का पाचन तंत्र अव्यवस्थित होता है और इससे आगे जिन पदार्थों का वह बार-बार सेवन करता है, उन्हें एक पल के लिए भी भूलता नहीं है, मात्र नशा करना कहलाता है। उनमें दारू या शराब प्रमुख है। इतना ही नही, किसी पार्टी, विवाह-शादी, स्वागत या विदाई समारोह के समय पर शराब का वितरण करना भी एक फैशन बन गया है। जिस समारोह के आयोजन में शराब वितरण न हो, उसे एक अच्छा आयोजन नहीं कहा जाता है।

इसके लिए बॉलीवुड सिनेमा उद्योग भी कम उत्तरदायी नहीं है। उसमें देश, धर्म-संस्कृति के हित की कोई भी बात ना होकर मात्र पैसा ही कमाना उसका उद्देश्य बनकर रह गया है। यही नहीं वह समाज को नशा करने हेतु प्रेरित भी कर रहा है जिससे निरंतर अपराध प्रवृत्ति को बढ़ावा मिल रहा है। देशभर में जहां लोग सुवह-शाम मंदिरों में जाते थे, घंटियां बजाकर देवी-देवताओं की आरती किया करते थे। आज शायद ही कोई ऐसा गांव बचा होगा जहां शराब की दुकान ठेका ना खुला हो। सायं होते ही वहां शराब खरीदने वालों की लंबी कतारें देखी जा सकती हैं। उनमें अधिकतर वे ही लोग अधिक दिखाई देते हैं जो दिहाड़ीदार होते हैं।

आधुनिक काल विकासवाद का युग है। संस्कार और शिक्षा की सुगंधा जो विद्याथी के आचरण और व्यवहार में दिखाई देनी चाहिए थी, के स्थान पर नवयुवक/नवयुवतियां जीवन की दिशा से

अनभिज्ञ या जीवन दिशा से भ्रमित होकर कैफे, रैस्टोरैंट या होटलों में आयोजित होने वाली छोटी या बड़ी पार्टियों में जाकर पवित्र रिस्तों की धज्जियां उड़ाते दिखाई देते हैं। वे वहां अनैतिक संबंध बनाकर पलभर में ही अपना वह सब कुछ खो बैठते हैं जो उन्हें जीवन में भविष्य के लिए सम्भाल कर रखना होता है।

गांजा, सुल्फा, स्मैग, हेरोइन, पोस्त, अफीम, चरस और चिट्टा जो नशे के विभिन्न रूप हैं, ने आज दारू या शराब को भी पीछे छोड़ दिया है। इन पदार्थों का युवावर्ग में तेजी से प्रचलन बढ़ रहा है। ऐसे व्यवसाय का साम्राज्य फैलाने में राज्य या क्षेत्र स्तरीय 'नशा अपराध तंत्र' की गैंग में सक्रिय स्मगलरों और उनके एजैंटों के रूप में आपसी बड़ी भूमिका रहती है जो किसी न किसी प्रकार नशा-पदार्थों को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाने का हर सम्भव प्रयास करते हैं। इस कार्य में उनके सिर पर हर समय संकट की घंटी बजती रहती है। फिर भी वह इस अपराधिक कार्य को अवश्य करते हैं। या तो वह पुलिस टीम द्वारा पकड़े जाते हैं, जेल की सलाखों के पीछे पड़े सड़ते रहते हैं या उसकी गोली ही का शिकार बनते हैं।

श्रीमद् भगवद्गीता के अनुसार जीवन का यह भी एक कड़वा सत्य है कि मनुष्य अच्छाई की अपेक्षा बुराई की ओर अतिशीघ्र आकष्ट होता है। कोई भी व्यक्ति जो जैसी संगत करता है, उसकी वैसी भावना पैदा होती है। उसकी जैसी भावना होती है, उसके वैसे विचार पैदा होते हैं। उसके जैसे विचार हों, वह वैसा ही कर्म करता है और वह जैसे कर्म करता है, उसे वैसा फल अवश्य मिलता है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि आज का मनुष्य अपनी जीवन शैली से पूर्ण रूप से अनभिज्ञ है या जीवन दिशा से भ्रमित हो गया है। उसका जीवन निरंतर आत्म पतन की ओर अग्रसर हो रहा है। वह इस अंधकूप से बाहर निकलकर पुन: सुख-समृद्धि से परिपूर्ण अवश्य हो सकता है अगर वह जीने के लिए कला प्रेमी बन सके और कलात्मक विधि से जीना सीख जाए। उसे अपना आनंददायक जीवन जीने के लिए विधिपूर्वक अपनी किसी न किसी मन पसंद कला (संगीत, वादन, नृत्य, निर्माण, अभिनय, लेखन, भाषण या चित्रकला) के साथ जुड़ना अति आवश्यक है। ◆◆◆

प्रसिद्ध आरती ओउम जय जगदीश हरे के रचयिता

ओम जय जगदीश हरे' आरती आज हर हिन्दू घर में गाई जाती है। इस आरती की तर्ज पर अन्य देवी देवताओं की आरतियाँ बन चुकी हैं और गाई जाती हैं। किसी ने कहा ये आरती तो पौराणिक काल से गाई जाती है। किसी ने इस आरती को वेदों का एक भाग बताया। और एक ने तो ये भी कहा कि सम्भवतः इसके रचयिता अभिनेता-निर्माता-निर्देशक मनोज कुमार हैं। परंतु इस मूल आरती के रचयिता के बारे में काफी कम लोगों को पता है। इस आरती के रचयिता थे पं. श्रद्धा राम शर्मा या श्रद्धा राम फिल्लौरी। पं. श्रद्धाराम शर्मा का जन्म पंजाब के जिले जालंधर में स्थित फिल्लौर नगर में हुआ था। वे सनातन धर्म प्रचारक, ज्योतिषी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, संगीतज्ञ तथा हिन्दी और पंजाबी के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। उनका विवाह सिख महिला महताब कौर के साथ हुआ था। बचपन से ही उन्हें ज्योतिष और साहित्य के विषय में उनकी गहरी रूचि थी। उन्होनें वैसे तो किसी प्रकार की औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं की थी परंतु उन्होंने सात साल की उम्र तक गुरुमुखी में पढाई की और दस साल की उम्र तक वे संस्कृत, हिन्दी, फारसी भाषाओं तथा ज्योतिष की विधा में पारंगत हो चुके थे। उन्होने पंजाबी गुरूमुखी में सिक्खां दे राज दी विथियाँ और पंजाबी बातचीत जैसी पुस्तकें लिखीं।

सिक्खां दे राज दी विथियां उनकी पहली किताब थी। इस किताब में उन्होनें सिख धर्म की स्थापना और इसकी नीतियों के बारे में बहुत सारगर्भित रूप से बताया था। यह पुस्तक लोगों के बीच बेहद लोकप्रिय साबित हुई थी और अंग्रेज सरकार ने तब होने वाली आईसीएस

जिसका नाम अब आईएएस हो गया है। परीक्षा के पाठ्यक्रम में इस पुस्तक को शामिल किया था। पं. श्रद्धा राम शर्मा पंजाबी के अच्छे जानकार थे और उन्होनें अपनी पहली पुस्तक गुरूमुखी मे ही लिखी थी परंतु वे मानते थे कि हिन्दी के माध्यम से ही अपनी बातों तक पहुंचाया जा सकता है। हिन्दी के जाने माने लेखक और साहित्यकार पं. रामचंद्र शुक्ल ने पं. श्रद्धा राम शर्मा और भारतेंदु हरिश्चंद्र को हिन्दी के पहले दो लेखकों में माना है।

पं. श्रद्धा राम शर्मा जी ने वर्ष 1877 में भाग्यवती नामक एक उपन्यास लिखा था जो हिन्दी में था। माना जाता है कि ह हिन्दी भाषा का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रकाशन 1888 में हुआ था। इसके प्रकाशन से पहले ही पं. श्रद्धा राम जी का निधन हो गया परंतु उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ने काफी कष्ट सहन करके भी इस उपन्यास का प्रकाशन करावाया था। वैसे पं. श्रद्धा राम शर्मा धार्मिक कथाओं और आख्यानों के लिए काफी प्रसिद्ध थे। वे महाभारत का उदाहरण देते हुए अंग्रेजी हुकुमत के खिलाफ जनजागरण का ऐसा वातावरण तैयार कर देते थे कि उनके आख्यान सुनकर प्रत्येक व्यक्ति के भीतर देशभक्ति की भावना भर जाती थी। इससे अंग्रेज सरकार की नींद उड़ने लगी और उसने1865 में पं.श्रद्धा राम को फिल्लौर से निष्कासित कर दिया और आसपास के गाँवों तक में उनके प्रवेश पर पाबंदी लगा दी। लेकिन उनके द्वारा लिखी गई किताबों का जो पठन विद्यालयों में हो रहा था, वह जारी रहा।

निष्कासन का उन पर कोई असर नहीं हुआ, बल्कि उनकी लोकप्रियता और बढ गई। निष्कासन के दौरान भी उन्होनें कई पुस्तकें लिखीं और लोगों के सम्पर्क में रहे।

पं. श्रद्धा राम ने अपने व्याख्यानों से लोगों में अंग्रेज सरकार के खिलाफ क्रांति की मशाल ही नहीं जलाई बल्कि साक्षरता के लिए भी अभूतपूर्व काम किया। 1870 में उन्होंने एक ऐसी आरती लिखी जो भविष्य में घर-घर में गाई जानी थी। वह आरती थी- 'ओम जय जगदीश हरे।। पं. शर्मा जहाँ कहीं व्याख्यान देने जाते 'ओम जय जगदीश' आरती गाकर सुनाते थे। उनकी यह आरती लोगों के बीच लोकप्रिय होने लगी और आज कई पीढियाँ गुजर जाने के बाद भी यह आरती गाई जाती है और कालजई हो गई है। इस आरती का उपयोग प्रसिद्ध निर्माता निर्देशक मनोज कुमार ने अपनी एक फिल्म 'पूरब और पश्चिम' में किया था और इसलिए कई लोग इस आरती के साथ मनोज कुमार का नाम जोड़ देते हैं।। शर्मा सदैव प्रचार और आत्म प्रशंसा से दूर रहे थे। शायद यह भी एक वजह हो कि उनकी रचनाओं को चाव से पढ़ने वाले लोग भी उनके जीवन और उनके कार्यों से परिचित नहीं हैं। 24 जून वर्ष 1881 ईस्वी को लाहौर में पंडित श्रद्धा राम शर्मा ने आखिरी सांस ली।◆◆◆

छेदों से छलनी हुई थाली

... राकेश सैन

आपने मेरे भाई के बारे पढ़ा है और मैने अपने भाई को पढ़ा है।'' 'हसीना' पार्कर फिल्म की नायिका जो कुख्यात आतंकी दाऊद इब्राहिम की बहन हसीना की भूमिका में है पुलिस वालों के समक्ष अपने भाई की महानता का बखान करती है। ये छवि सुधारक संवाद फिल्म के कथानक की मांग है? नहीं। ये प्रयास है दाऊद को रॉबिनहुड बताने, उसकी नई छवि गढने का जो उसके खूंखार अंत:करण के विपरीत है। गुजरात के व्यापारियों से रंगदारी वसूलने वाले बदनाम तस्कर अब्दुल लतीफ पर बनी फिल्म 'रईस' में दंगों के दौरान फिल्म का नायक हिंदू-मुसलमान दोनों के लिए लंगर लगाते हुए दिखाया जाता है। देगची में रंधते हुए दलिए के दो-चार दाने ही पूरी देग का हाल बता देते हैं, जरूरी नहीं कि पूरी देग में हाथ डाल कर देखा जाए। फिल्म स्टार सुशांत राजपूत की मौत से शुरू हुए प्रकरण के मध्यांतर में कंगना रणौत और शिवसेना के टकराव की नई कहानी को आगे बढ़ाते हुए जया बच्चन ने मुंबई फिल्म उद्योग की गंदगी का पटाक्षेप करने वाले भाजपा सांसद व अभिनेता रवि किशन पर कटाक्ष करते हुए कहा कि-'कुछ लोग जिस थाली में खाते हैं उसी में छेद करते हैं। जया जी थाली में छेक की बात करती हैं जो शायद मुंबईया फिल्मों के प्रारंभ की बात होगी, वर्तमान में तो छेक दर छेक से थाली छलनी हुई दिख रही है।' फिल्म का वह दृश्य सभी को याद होगा जिसमें गंगा घाट के पंडे को बलात्कारी के रूप में दिखाया गया, परंतु क्या पाठक किसी एक फिल्म का नाम बता सकते हैं जिसमें किसी पादरी या ऊपर दिए गए फिल्म हसीना पार्कर व रईस तो केवल उदाहरण मात्र हैं, अगर सभी छेदों का जिक्र मात्र ही किया जाए तो बॉलीवुड के स्याह पक्ष पर एक अच्छा खासा ज्ञानकोष तैयार हो सकता है। सुशांत सिंह राजपूत की मौत के बाद देश का हर नागरिक इस सच को समझने लगा है कि बॉलीवुड दिखावटी मुखौटा पहन कर लोगों के सामने कुछ और है, इसके पीछे कुछ और। ऐसे में भाई-भतीजावाद, अश्लीलता, नक्सली-जिहादी गठजोड़, ड्रग्स के नशे में चूर बॉलीवुड का शुद्धिकरण किया जाना अब जरूरी हो गया है। बॉलीवुड में महिला शोषण का तो खुद कंगना रनौत ने एक ट्वीट से पर्दाफाश कर दिया जिसमें उन्होंने लिखा कि, 'कौन सी थाली दी है जयाजी और उनकी इंडस्ट्री ने?एक थाली मिली थी जिसमें दो मिनट के रोल आइटम नम्बर्ज और एक रोमांटिक सीन मिलता था वो भी हीरो के साथ सोने के बाद।' अभी एक उभरती कलाकार पायल घोष ने 'मी टू' अभियान के तहत निर्माता निर्देशक अनुराग कश्यप पर उसका यौन शोषण करने का आरोप लगाया है। इस तरह के आरोप दसियों फिल्म स्टार व निर्माता निर्देशकों पर लग चुके हैं। यह अब खुला रहस्य है कि बहुत से कलाकारों को कई तरह के समझौते करके फिल्मों में रोल मिलता है न कि उनकी अभिनय क्षमता के आधार पर। खुद बॉलीवुड इस विषय पर कई फिल्में बना चुका है।

शायद यही कारण है कि आज फिल्मों में अश्लीलता व भौंडेपन को कहानी की मांग, दर्शकों की पसंद, आइटम सांग आदि की आड़ में कवर फायर दिया जाता है। अपने लेख में अजय खमेरिया ने ठीक ही लिखा है कि, देश के बौद्धिक विमर्श को दूषित करने में बॉलीवुड की एकपक्षीय भूमिका रही है। इसलिए इसे गहराई से समझने की आवश्यकता है। पूरा सिने जगत उसी बौद्धिक जिहाद को आगे बढ़ाने में संलग्न रहा है, जिसकी पटकथा वामपंथियों द्वारा लिखी गई है। 25 मई, 1943 को मुंबई के मारवाड़ी हाल में प्रो. हीरेन मुखर्जी ने भारतीय जन नाटट संघ या इंडियन पीपल्स थियेटर एसोसिएश (इप्टा) की स्थापना के अवसर पर आह्वान किया, 'लेखक और कलाकार आओ, अभिनेता और नाटककार आओ, हाथ से और दिमाग से काम करने वाले आओ और स्वंय को आजादी और सामाजिक न्याय की नई दुनिया के निर्माण के लिये समर्पित कर दो।' प्रो. मुखर्जी के इस आह्वान का वामपंथियों ने खुल कर दुरुपयोग किया और पूरे फिल्म जगत पर अपने मोहरे बैठा दिए।

बड़ी फिल्मों के निर्माण के लिए जरूरत पड़ी आकूत धन की जिसको कथिततौर पर पूरा किया पेट्रो डॉलर व जिहादी और तस्कर गिरोह ने। चाहे बलराज साहनी जैसे कलाकारों ने इप्टा को राजनीतिक दांवपेच से दूर रखने का प्रयास भी किया परंतु वामपंथी लोहावरण इतना मजबूत था कि वे उसे भेद नहीं पाए। वास्तव में बॉलीवुड अगर एक बहुविध कलाकारों से भरी फिल्म है, इसमें नायक और खलनायक दोनों हैं। ड्रग्स बॉलीवुड की एक सच्चाई है, जिसकी सफाई इसलिए जरूरी है क्योंकि देश का नौजवान बॉलीवुड की चकाचौंध में अपने सपने तलाशता है।

यहां का अंधेरा पूरी नस्ल को अंधा कर सकता है। नशों को लेकर 'उड़ता पंजाब' फिल्म बनाने वाला बॉलीवुड खुद राकेट की गति पर हवा से बातें करता दिख रहा है। अफसोस की बात है कि सुशांत की मौत के कारण तलाशती हुई जांच एजेंसियां नशे के मकड़जाल तक पहुंची, तो बॉलीवुड की थाली और दाल काली जैसी अनावश्यक चर्चाएं छेड़ कर नशे को खाद पानी देता दिख रहा है। बॉलीवुड को आईना दिखाना अब जरूरी हो गया है। इसका एक मात्र उपाय यही है कि पूरे फिल्म उद्योग का शुद्धिकरण हो। छलनी हुई थाली के छेद भरने के प्रयाय होने चाहिए न कि उन पर पर्दादारी के। ◆◆◆

आभासी दुनिया के बनावटी लोग

... सुरेन्द्र कुमार

देश में फिल्म इंडस्ट्री को सितारों की दुनिया कहा जाता है। फिल्म व्यवसाय से जुड़े प्रत्येक कलाकार को देशवासी नायक व नायिका की संज्ञा देते हैं। लोगों में फिल्म स्टार्स के प्रति इतना आकर्षण है कि उनकी एक झलक पाने के लिए वे महीनों तक भूखे प्यासे रह सकते हैं। इतना ही नहीं कुछ संकुचित मानसिकता से ग्रसित लोग अपने पसंदीदा कलाकार की एक झलक पाने के लिए मरने व मारने पर उतारू हो जाते हैं। अमिताभ, आमिर, शाहरुख और सलमान सरीखे कलाकारों के साथ एक सैल्फी खिंचवाने के लिए यहाँ लोग पागल हो जाते हैं। यहाँ जलसा ही नही मन्नत के बाहर भी माह में कई दिन दर्शकों का हुजूम उमड़ता है। परंतु राष्ट्रीय स्तर पर जब हम किसी व्यक्ति विशेष को इज्जत देते हैं तो उसके प्रतिउत्तर में विशिष्ट जन का भी फर्ज बनता है कि वह जनमानस की भावनाओं को भली-भाँति समझें और उनकी कद्र करें। क्योंकि सम्मान कभी भी एक तरफा नहीं हो सकता। बॉलीवुड के प्रत्येक अभिनेता के लिए देशवासियों के हृदय में विशेष स्थान है। लेकिन आमजन के लिए फिल्मी कलाकारों के मन में कितना मान है, इसका आभास देश के चंद लोगों को ही है। बॉलीवुड की संकरी विचारधारा के अनेकों उदहारण हमारे समक्ष प्रस्तुत होते रहते हैं। कभी कभी तो ऐसा प्रतीत होता है कि आभासी दुनिया के इन स्टार्स को जीवन के सत्य से कोई सरोकार नहीं है। बॉलीवुड में हत्या व आत्महत्या तथा ड्रग्स माफिया का कनेक्शन नया नहीं है। यहाँ वर्षों से फिल्म जगत पर संगीन आरोप लगते आए हैं। यहाँ यदि कोई चमकता सितारा भी अचानक जिंदगी से रूख्सत हो जाता है तब भी हमारे विश्व प्रसिद्ध कलाकारों के मुंह से जीरा तक नहीं निकलता। जिस मुद्दे पर मुम्बई के महानुभावों को घंटों व्याख्यान देना चाहिए था उस पर इन अभिनेताओं की बोलती बंद हो जाती है। हम सुशांत सिंह राजपूत की मृत्यु को एकाएक खुदखुशी मान सकते हैं। मामला सीबीआई के अधीन है तथा प्रवर्तन निदेशालय तथ्यों व बयानों को टटोलने में जुटा है। मुम्बई नगरी का एक उदयीमान सितारा अचानक पंखे से लटका मिलता है तो पूरा बॉलीवुड मौन धारण क्यों कर लेता है। फिल्मी दुनिया के लोगों के मुंह से सांत्वना के नाम पर उनके लिए आज तक एक शब्द नहीं निकला है। क्या एसएसआर का बॉलीवुड से कोई नाता नहीं था? क्या वह फिल्मी दुनिया के लिए पराया था? क्या साथी कलाकार की अचानक हुई मृत्यु पर बोलने से मेगा कलाकारों को डर लगता है? क्या बॉलीवुड नेपोटिज्म पर ही खुलकर बोलता है? ऐसे अनेकों सवाल है जो आमजन के गले से नीचे नहीं उतर रहे हैं। इसी तरह यदि बॉलीवुड की वीरांगना नारी कंगना रणौत फिल्म जगत के ड्रग्स कनेक्शन पर कुछ बातें सार्वजनिक करतीं हैं तो पूरी मुम्बई सिटी उनकी बैरी बन जाती है और तो और बीएमसी उनके वर्षों की मेहनत से बने स्टूडियो को डोजर से तोड़ देता है। जबकि विश्व विख्यात कलाकारों की प्रतिक्रिया यहाँ भी अभी इंतजार है। अब सवाल उठाता है कि क्या बॉलीवुड में ड्रग्स कनेक्शन के ऊपर बोलना अपराध समझा जाता है? क्यों नशे के काले कारोबार पर फिल्मी कलाकार चुप्पी साध लेते हैं? क्यों नशे के खिलाफ बोलने वालों को यहाँ थाली में छेद करने वाले कहा जाता है? क्या बॉलीवुड वंशवाद के समर्थन का केंद्र है? माना कि नशे पर सार्वजनिक प्रतिक्रिया देने से प्रसिद्ध कलाकारों की ख्याति दाव पर लगती है। यदि कंगना रणौत और रवि किशन जैसे स्टार्स ड्रग्स को इंडस्ट्री से उखाड़ फेंकने की बात कर रहे हैं तो इससे जया बच्चन, उर्मिला मातोंडकर, हेमा मालिनी, करण जौहर, अनुराग कश्यप, सोनम कपूर, तापसी पन्नू इत्यादि को क्या परेशानी है।

बॉलीवुड के ड्रग्स कनेक्शन को हम सिरे से इसलिए नही नकार सकते क्योंकि हमारे पास ऐसे ढेरों सबूत हैं जो फिल्म जगत को नशे से अछूता नहीं रखते। शायद उन्हें बॉलीवुड की प्रतिष्ठा से कोई सरोकार न हो। शायद उन्हें अखंड बॉलीवुड को खंडित करने में अपनी भलाई सुझती हो। शायद उन्हें उभरते सितारों से इर्ष्या होती हो। ऐसे अनेकों तथ्य हैं जो इन दिनों जनमानस के मस्तिष्क को बारंबार झकझोर रहे हैं। अत: प्रत्येक देशवासी को चाहिए कि वे आभासी दुनिया के इन बनावटी कलाकारों से ज्यादा उम्मीदें न पालें और न ही इन्हें जरूरत से ज्यादा सम्मान दें। हमें इन्हें ढाई घंटे मनोरंजन करने वाले कलाकार से ज्यादा नहीं समझना होगा। शायद तब उन्हें जनमानस की भावनाओं की कद्र हो ◆◆◆

सिनेमा में नशा

... डॉ. अवनीश वर्मा

स्वामी विवेकानंद ने कहा है-'खुद को कमजोर मान लेना सबसे बड़ा पाप है। मन की शक्तियां सूर्य की किरणों की तरह होती है,जब केंद्रित होती हैं तो रोशनी देती हैं। मगर अफसोस आज का इंसान ये सब चीजें भूल गया है और अपने आपको नशे में धकेलता चला जा रहा है। आज जिस तरह से भारत में नशा बढ़ा है वो हैरान करने वाला है। किसी भी देश की युवा पीढ़ी उसका भविष्य होती है परन्तु भारत में आज 75 फीसदी युवा नशे की चपेट में है। हमारे यहाँ बॉलीवुड सेलिब्रिटी द्वारा भी नशे को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इससे भी हमारे समाज पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। इसका जीता जागता उदहारण हमें हालही के दिनों में देखने को मिला है। हालाँकि ऐसा नहीं है कि सारी इंडस्ट्री ही नशे में फंसी हुई है फिर भी आधुनिकता की चमक और करियर की असफलता दोनों ही बहुत बड़े कारण हैं। समाज का प्रत्येक जागरूक व्यक्ति यह चाहता है कि समाज नशामुक्त रहे। यहाँ तक कि नशा करने वाला व्यक्ति स्वयं भी नहीं चाहता कि उसका परिवार या उसके बच्चे किसी प्रकार का नशा करें। नशा मुक्त समाज की जो कल्पना आदरणीय मोदी जी ने की है या जितनी संकल्पना समाज के जागरूक एवं बुद्धिजीवी वर्ग द्वारा की गयी है उन सभी में सबसे ज्यादा विरोध अवैध रूप से बाजार में बेचे जा रहे नशीले पदार्थों का है । आज हमारे आम लोगों पर कानूनी शिकंजा भी कसता है। जो लोग नशे के कारोबार में सम्मिलित होते हैं उनके लिए सजा का भी प्रावधान है परन्तु फिल्म इंडस्ट्री के लोग अपनी हाई प्रोफाइल इमेज के चलते इस सामाजिक बुराई को बढ़ावा दे रहे हैं। कानून की गिरफ्त में हाई प्रोफाइल सोसाइटी के लोगों को भी लाना चाहिए। इन लोगों को जिस प्रकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संरक्षण प्राप्त होता है, इससे इनका सम्राज्य स्थापित हो रहा है जो कि हमारे समाज के लिए एक चुनौती बन गया है। सिनेमा का समाज पर एक बड़ा प्रभाव है। जन जागरूकता की बात हो, सकारात्मक सोच की बात हो या फिर देश भक्ति की भावना की, सिनेमा हमेशा से ही अपनी भूमिका निभाता रहा है। आजकल हर कोई सिनेमा से जुड़ा हुआ है। आज की युवा पीढ़ी फिल्मों के कुछ पात्रों को या परिदृश्यों को अपना आदर्श मानती है। कुछ लोग तो यहाँ तक प्रभावित रहते है कि वो चाहते हैं कि उनका व्यक्तित्व और जीवन वैसा ही हो जैसा कि वो किसी फिल्म के चरित्राा को आदर्श मान लेते है। ये चरित्राा कभी कभी युवाओं के जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाते हैं। हालाँकि हम सब जानते हैं कि फिल्मे इंडस्ट्री के सभी कलाकार एक अभिनय करते हैं जो कि उनकी भी अपनी असली जिन्दगी से बहुत अलग होता है परन्तु फिर भी हम उस चरित्र से बहुत प्रभावित रहते हैं । इसी परिदृश्य में जब सामाजिक कुरीतियों की बात आती है तो ये फिल्मी सितारे एक अच्छी भूमिका निभा सकते हैं । ऐसे में जब भारत में नशे के प्रचलन को बढ़ावा मिला है तो कहीं न कहीं फिल्मी सितारों की जिंदगी का भी हमारे समाज पर एक असर रहता है। जिस प्रकार से फिल्म इंडस्ट्री का नाम नशे के साथ जुड़ा है यह हमारे समाज के लिए एक खतरे की घंटी है। युवा पीढ़ी जो कि फिल्म के नायक या नायिकाओं को अपना आदर्श मानते हैं उन पर इसका विपरीत प्रभाव पड़ेगा। ऐसे समय में इन सभी नायक नायिकाओं को समाज के प्रति अपनी जवाबदेही को समझते हुए नशे के खिलाफ

शुरू हुई इस मुहिम में साथ देने के लिए एकजुट हो कर के आगे आना चाहिए ताकि जो लोग रियल लाइफ में इनको अपना आदर्श मानते हैं वो रियल लाइफ में भी इनका अनुसरण कर के एक सशक्त समाज के निर्माण में अपनी भूमिका निभा सकें। भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के निर्देश पर एम्स के ड्रग डिपेंडेंसी ट्रीटमेंट सेंटर द्वारा त्यार की गयी रिपोर्ट के आंकड़े चौकाने वाले हैं। इस सर्वे में बताया गया है कि तकरीबन 7.13 करोड़ भारतीय विभिन्न प्रकार के नशे की चपेट में हैं। भारत सरकार के इस सर्वे में प्रत्येक राज्य एवं केंद्र शासित राज्यों को शामिल किया गया है। सर्वे में सबसे जयादा 5.17 करोड़ लोग शराब के गंभीर आदी पाय गए हैं। इसके इलावा 72 लाख लोग भांग, 60 लाख लोग अफीम व् चरस आदि और 11 लाख लोग नशीली गोलियों या इंजेक्शन से होने वाले नशे की लत में फंसे हुए हैं । सर्वे में 70293 लोग ऐसे भी शामिल हैं जो नशे के लिए खतरनाक किस्म के ड्रग्स का इस्तेमाल करते हैं। यह सर्वे ड्रग्स और शराब की लत की चिंताजनक तस्वीर प्रस्तुत करता है । सर्वे में बताया गया है कि भांग बहुत से लोगों के लिए एक शुरूआती नशे (गेटवे ड्रग) की तरह है। मतलब कि लोग भांग से नशे की शुरुआत करते हैं और फिर कोकीन व हेरोइन जैसे खतरनाक नशों के जाल में फंस रहे हैं । इस रिपोर्ट में महिलाओं द्वारा नशे करने का डाटा भी है । कुल आबादी का 27.30 प्रतिशत पुरुष और 6.4 प्रतिशत महिलायें शराब का सेवन करती हैं। इन सब में सर्वाधिक प्रचलन शराब का है। शराब कानूनी रूप से प्रचलित है तो गांजा, अफीम, हेरोइन या कोकीन आदि देश में प्रतिबंधित हैं। इनका व्यापार चोरी-छिपे होता है। यह भी सच है कि शराब की बिक्री से सरकार को एक बड़े राजस्व की प्राप्ति होती है परन्तु इस प्रकार की आय से हमारा सामाजिक पतन हो रहा है और युवा पीढ़ी नष्ट हो रही है। समाज को नशे से बचाने क लिए नशे के मुख्य कारण का नाश करना बेहद जरूरी है। नशे की गिरफ्त में युवा वर्ग आ क्यों रहा है,नशीले पदार्थ बाजार में आ कैसे रहे हैं। यहां पर सुरक्षा एजेंसियों को और सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। नशे के स्त्रोतों के साथ-साथ बाजार में इसे खपाने वालों को खोजने की भी जरूरत है। इसके साथ-साथ समाज में युवाओं की समस्याओं पर ध्यान देने की भी जरूरत है। आधुनिकता, औद्योगीकरण, वैश्वीकरण आदि विषयों ने युवाओं को घेर रखा है। आपस में बढ़ती हुई प्रतियोगी भावना,कम समय में सफलता की इच्छा, ऊंचाईयों को छूने की अन्धी लालसा, कम प्रयासों में ज्यादा प्राप्ति की इच्छा आदि ने हमें ऐसी दौड़ में शामिल कर दिया है जहां पर हमें न तो कुछ दिखाई देता है, न ही अपना ध्यान रहता है और न ही समाज का। यदि हम युवाओं को सही-गलत, कर्तव्य-दायित्व और सामाजिक परिपक्वता का पाठ पढ़ा सके तो नशा मुक्त समाज स्थापित करने में हम सफल हो जायेंगे ।इस मुहिम में बालीवुड सेलिब्रिटीज एक रोल मॉडल बन कर आगे आएं तो हम एक स्वस्थ एवं नशा मुक्त समाज स्थापित करने में सफल हो सकते है।◆◆◆

शक्तिपीठों के दर्शन को अब घर बैठे कराएं पंजीकरण

हिमाचल के प्रसिद्ध शक्तिपीठों के दर्शन करने के लिए बाहरी राज्यों से आने वाले श्रद्धालुओं को बड़ी राहत दी गई है। कोविड ई-पास वेबसाइट में हिमाचल आने वाले ऑप्शन में मंदिर विजिट का प्रावधान कर दिया गया है। मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं को पहले की तरह कोविड-19 ई-पास में जाकर हिमाचल आने की ऑप्शन को चुनना होगा। इसमें नाम, पता, गाड़ी नंबर, आधार कार्ड नंबर समेत अन्य डिटेल भरनी होगी। टूरिज्म वाली ऑप्शन चुनकर टैंपल विजिट पर क्लिक करना होगा। जिस होटल में श्रद्धालुओं को दो दिन रूकना है, उस होटल का पूरा नाम पते के साथ भरना होगा। कोविड ई-पास के अंत में श्रद्धालु को कोरोना की निगेटिव रिपोर्ट के साथ अपने आधार कार्ड की कॉपी अपलोड करनी होगी। पंजीकरण के बाद श्रद्धालु को आईडी नंबर दिया जाएगा। प्रशासन की तरफ से जांच के बाद ही श्रद्धालुओं के ये पास स्वीकृत किए जाएंगे। श्रद्धालु ऑनलाइन पास को मंदिर के सुरक्षा कर्मियों को दिखाकर दर्शन कर सकेंगे। वर्तमान में बाहरी राज्यों से आ रहे श्रद्धालुओं की मंदिर में मैनुअल कोविड-19 रिपोर्ट जांची जाती है। डीसी उना संदीप कुमार ने बताया कि कोविड ई-पास पर जाकर अन्य राज्यों के श्रद्धालु मंदिर दर्शन के लिए ऑनलाइन पंजीकरण करवा सकते हैं।◆◆◆

बाजार में आईं कंगना की तस्वीर वाली साड़ियां

महाराष्ट्र सरकार और अभिनेत्री कंगना रनौत में तनातनी के बीच सूरत के एक साड़ी निर्माता ने कंगना के झांसी की रानी वाले किरदार का इस्तेमाल करते हुए साड़ियां तैयार की हैं। ये साड़ियां झांसी की रानी मणिकर्णिका, सैल्यूट टू कंगना स्लोगन के साथ बाजार में उतारी गई हैं। साड़ी निर्माता का कहना है कि जिस बहादुरी से कंगना अकेले विरोधियों का मुकाबला कर रही हैं, वह उसके कायल हो गए हैं। सूरत के साड़ी निर्माता आलिया साड़ी मैन्यूफैक्चरिंग ने इन्हें तैयार किया है। सूरत के कपड़ा व्यापारियों का मानना है कि अन्याय के सामने बिना डरे कंगना अकेले खड़ी हैं। आलिया टेक्सटाइल्स के रजत डाबर का कहना है कि यह साड़ी सोशल मीडिया पर वायरल हो गई, जिसके बाद देशभर से इसकी मांग बढ़ गई है।◆◆◆

मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम होगा अयोध्या एयरपोर्ट का नाम

भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या में बनने जा रहे एयरपोर्ट का नाम मर्यादा पुरूषात्तम श्रीराम होगा, जिसे अगले साल दिसंबर तक पूरा कर लिया जाएगा। इस तरह यह उत्तर प्रदेश में पांचवा एयरपोर्ट होगा, जो अंतरराष्ट्रीय स्तर का होगा। अभी लखनऊ में अमौसी का चौधरी चरण सिंह तथा वारणसी का लाल बहादुर शास्त्री एयरपोर्ट ही अंतरराष्ट्रीय स्तर के हैं।

अधिकारिक सूत्रों ने कहा कि राम मंदिर बनने के बाद यहां राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय श्रद्धालुओं और पर्यटकों की संख्या में भारी वृद्धि होगी। इसके मद्देनजर राज्य सरकार ने एयरपोर्ट के विस्तार की योजना बनाई है। गौरतलब है कि अप्रैल 2017 तक अयोध्या एयरपोर्ट का विकास दो चरणों में करने की योजना बनाई गई थी। इसके लिए हुए टैक्नो-इकॉनोमिक सर्वे में पहले चरण में एटीआर-72 विमानों के लिए विकसित किया जाना था। इसमें रन-वे की लंबाई 1680 मीटर रखी जानी थी। दूसरे चरण में ए-321, 200 सीटर विमानों के संचालन के लिए एयरपोर्ट विकसित होना था। ◆◆◆

आरोग्य भारती पौधों का महत्व घर-खेत तक पहुंचाएगी

... कविता गौतम

आरोग्य भारती ने मानव सृष्टि प्रकल्प, गण की सैर सोलन में औषधीय पौधों के प्रचार प्रसार, संरक्षण, संवर्धन आदि विषयों पर चिंतन बैठक आयोजित की। चर्चा के दौरान कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित आरोग्य भारती के राष्ट्रीय सचिव डॉ राकेश पंडित ने स्थानीय वनस्पतियों में उपस्थित औषधीय गुणों के बारे में जानकारी प्रदान की। उन्होंने ने बताया कि कोरोना उपचार पर हो रही शोध में विश्व भर में 125 से अधिक औषधीय पौधों पर शोध का काम हो रहा है। इनमें से अधिकांश वनस्पतियां आयुर्वेद में वर्णित जड़ी-बूटियां जैसे सैरेयक, जूही, कालमेघ, चिरायता, हरड़, दाडिम हैं जो भारत में प्रचूरता से पायी जाती हैं। उन्होंने ने आगे बताया कि प्राप्त जानकारी के अनुसार अमेरिका जैसे विकसित देशों में भी 65 प्रतिशत से अधिक लोग कोरोना के बचाव तथा इम्युनिटी बढ़ाने के लिए आयुर्वेदिक वनस्पतियों का प्रयोग कर रहे हैं। आयुष काढ़ा तथा भोजन पकाने में प्रयुक्त होने वाली सामान्य हर्बस पुदीना,अदरक, लहसुन, दालचीनी, चौलाई, बथुआ,पोई ,काली मिर्च, पिपप्ली, ईम्युनिटी बढ़ाने में कारगर सिद्ध हो रही हैं।

माधव सृष्टि प्रकल्प में मानव आकृति औषधीय वनौषधि उद्यान का कार्य प्रगति पर है। मानव शरीर के विभिन्न अंगों के लिए उपयोगी औषधीय वनस्पतियों को क्रम बद्ध तरीके से रोपित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त लगभग 10 बीघा क्षेत्र में एक विशाल हर्बल गार्डन विकसित करने के लिए कार्ययोजना पर कार्य जारी है। इस हर्बल गार्डन में हिमाचल प्रदेश एवं हिमालय क्षेत्र के दुर्लभ औषधीय पौधों को आधुनिक तकनीकी एवं शुद्ध जैविक बिंदी से उगाया जाएगा। औषधीय पौधों के प्रतिसंस्करण सैमी-प्रोसैसिंग, प्रोसैसिंग के साथ साथ किसानों को औषधीय कृषि करण हेतु प्रोत्साहित एवं प्रशिक्षण करने का प्रावधान किया जाएगा। डॉ. राकेश पंडित ने माधव सृष्टि प्रकल्प के परिसर में औषधीय

वनस्पतियों की पहचान, उनके गुणों तथा संरक्षण के बारे में जानकारी प्रदान की। योग गुरु श्री श्रीनिवास मूर्ति के निर्देश पर विकसित हो रहे 'माधव सृष्टि प्रकल्प' में संस्कार युक्त शिक्षा के अतिरिक्त अन्य विभिन्न आयामों जैसे योगशाला, भारतीय देशी गाय शोध-संवर्धन, पंचगव्य चिकित्सा, औषधीय वनस्पति संरक्षण-संवर्धन औषधीय वृक्षारोपण, आहार एवं आरोग्य के स्रोत फलदार वृक्षारोपण, विषमुक्त जैविक खेतीय प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण आदि आयामों का अद्यतन स्वरुप विकसित किया जा रहा है। माधव सृष्टि प्रकल्प के प्रणेता योग गुरु श्री श्रीनिवास मूर्ति ने प्रकल्प के भविष्य विकास योजनाओं की जानकारी, समाज का सहयोग एवं योग के कोरोना काल में महत्त्व के बारे में बताया। वनस्पति शास्त्र विशेषज्ञ डॉ अनिल ठाकुर ने हर्बल गार्डन स्थापना संबंधी योजना की विस्तृत जानकारी दी। आरोग्य भारती सोलन के अध्यक्ष डॉ. लोकेश ममगई ने बताया कि माधव सृष्टि में प्रतिमास निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर डॉ अनिल मैहता, उपाध्यक्ष आरोग्य भारती हिमाचल, आरोग्य भारती सोलन के अध्यक्ष डॉ लोकेश ममगई, आरोग्य भारती शिमला शाखा के बनौषधी आयाम प्रमुख वनस्पति वैज्ञानिक प्रो. अनिल ठाकुर, डॉ बालमुकुंद, प्रधानाचार्य श्री गणेश जैतक, श्री मुनीष कुमार, श्री नागेश कुम्बले सहित अन्य लोग भी इस चिंतन बैठक में शामिल हुए। सोशल दूरी का ध्यान रखते हुए इस कार्यक्रम का आयोजन किया।◆◆◆

लव जिहाद के मामलों को लेकर विहिप कानून मंत्री से मिली

विहिप शहरी विकास व कानूनी विधि मंत्री सुरेश भारद्वाज से मिली। शिमला में घट रहे लव जिहाद के मामलों के बारे में विस्तृत से जिला शिमला संगठन मंत्री कुशल चंद ने कहा। पिछले कुछ महीनों से शिमला लव जिहाद के कुछ मामले सामने आए हैं। जिसमें से दो मामले तो छोटा शिमला थाना क्षेत्र के हैं। पुलिस प्रशासन ने इन मामलों पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया है। और ना ही आरोपियों पर कोई कार्यवाही की यह पुलिस प्रशासन के लिए बहुत ही निंदनीय विषय है। ऐसा ही मामला एक विश्व हिंदू परिषद के ध्यान में कुछ दिन पहले आया। पीड़िता 6 दिन तक थाने के चक्कर काटती रही। और इसी बीच में महिला एसपी शिमला के पास जाकर भी अपनी शिकायत दर्ज करवाई उसके बावजूद भी एफआईआर दर्ज नहीं हुई। विश्व हिंदू परिषद प्रशासन के इस रवैया का कड़ा विरोध करता है। आरोपी ने

प्रवीण भट्ट नाम बता कर लड़की से अपने मुस्लिम होने की जानकारी को भी छिपाया लड़की ने सोचा कि यह हिंदू है। वह पीड़िता के साथ मंदिर इत्यादि में भी जाता था। यह सिलसिला लंबा चलता रहा। आरोपी ने एक दिन पीड़िता को अपने घर बुलाया। और रोजे रखने के लिए भी दबाव डाला और कलमा भी पढ़ाया। हद तो तब हुई जब आरोपी के परिजनों व रिश्तेदारों ने पीड़िता को गौ मांस खाने के लिए बाधय किया। विश्व हिंदू परिषद ऐसे मामलों को लेकर बहुत गंभीर है। अगर प्रशासन इन मामलों पर ध्यान नहीं देगा तो विश्व हिंदू परिषद शिमला आंदोलन करेगा। और लड़की को न्याय दिलाएगा। इस ज्ञापन कार्यक्रम में जिला मंत्री रवि दत्त शर्मा ग्रामीण संगठन मंत्री विनीत विश्नोई मातृशक्ति शिवजी का मीरा ठाकुर कालीबाड़ी नगर संयोजक प्रमोद ठाकुर इत्यादि कार्यकर्ता शामिल रहे। ◆◆◆

... भूमिदत्त शर्मा

नेरी शोध संस्थान में पुराण अनुशीलन गोष्ठी

शोध संस्थान नेरी में संस्थान संस्थापक ठाकुर रामसिंह की 10वीं पुण्यतिथि पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर संस्थान में हवन यज्ञ आयोजित किया गया। पुण्यतिथि कार्यक्रम के पहले सत्र की अध्यक्षता संस्थान सचिव भूमिदत्त शर्मा ने की। सर्वप्रथम मजलसी राम वैरागी ने ''चरणों में मातृ भूमि के'' कविता का पाठ किया। कार्यक्रम में प्यार चन्द परमार ने ठाकुर राम सिंह की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए उन्हें एक युग पुरुष बताया। डॉ. राकेश कुमार शर्मा ने ठाकुर रामसिंह की इतिहास दृष्टि पर चर्चा करते हुए बताया कि उन्होंने भारत के इतिहास को भारतीय दृष्टिकोण से भारत के चैतन्य के प्रकाश में तथ्यों सहित लिखने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि वे अपने आप में एक संस्था थे। सत्र अध्यक्ष भूमि दत्त शर्मा ने कहा कि ठाकुर रामसिंह के व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में बताते हुए कहा कि ठाकुर रामसिंह ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित किया है। उन्होंने शोध संस्थान की स्थापना करके इतिहास को नई दिशा प्रदान की है। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में ''श्रीमद्भागवत पुराण अनुशीलन गोष्ठी'' का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता डॉ. एम. आर. शर्मा ने की। मुख्य वक्ता डॉ. ओमदत्त सरोच ने श्रीमद्भागवत पुराण के दूसरे स्कन्द के दस अध्यायों का सारांश प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि श्रीमद्भागवत पुराण के दूसरे स्कन्द में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड, सृष्टि रचना, ईश्वर के विभिन्न अवतारों व ईश्वर के साकार व निराकार दोनों स्वरूपों का विस्तार से वर्णन किया गया है। उन्होंने बताया कि भारतीय वैदिक साहित्य वैज्ञानिक है। सत्राध्यक्ष डॉ. एम.आर. शर्मा ने कहा कि हमें पुराणों का अनुशीलन अवश्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें इन ग्रन्थों का बार-बार अध्ययन करना चाहिए। इनका अध्ययन करने से केवल हमारे ज्ञान की वृद्धि नहीं होती शान्ति की प्राप्ति भी होती है। इन ग्रन्थों की तुलना किसी भी वस्तु से नहीं की जा सकती। उन्होंने कहा कि व्यक्ति के अन्दर जिज्ञासा का होना अति आवश्यक है तभी वह विभिन्न ग्रन्थों का अनुशीलन कर सकता है। इस मौके पर डॉ. विकास शर्मा, प्रवीण भट्टी, रमेश रांगड़ा, डॉ. अश्वनी शर्मा, डॉ. संजीव बन्याल, रोहित परमार, गोकुल लखनारा आदि लोग मौजूद रहे।

◆◆◆ **भूमिदत्त शर्मा** महासचिव शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर।

सेवा भारती सुन्नी ने किया 41 यूनिट रक्तदान

सेवा भारती की सुन्नी इकाई द्वारा सोमवार को जिला शिमला के सुन्नी क्षेत्र में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिला शिमला के सेवा प्रमुख कर्म सिंह ने बताया इस अवसर पर 41 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। रक्तदान शिविर की अध्यक्षता आईपीएच विभाग से सेवानिवृत्त अधिकारी अनंतराम वर्मा ने की। कर्म सिंह ने बताया कि सेवा भारती एक सामाजिक संगठन है और विकट परिस्थितियों में हमेशा समाज की मदद के लिए तैयार रहता है। कोरोना महामारी के चलते प्रदेश स्तरीय अस्पताल आईजीएमसी में खून की कमी को देखते हुए रक्तदान शिविर लगाया, जिसमें सुन्नी के युवाओं ने काफी उत्साह दिखा। साथ ही आईजीएमसी ब्लड बैंक से चिकित्सक दल ने रक्तदान को सुरक्षित तरीके से सम्पन्न करवाने में मदद की। इस अवसर पर शिमला विभाग प्रचारक अजय भी उपस्थित रहे। शिविर को सेवा भारती सुन्नी इकाई द्वारा सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।◆◆◆

आइपीएल में मैच रेफरी बने हिमाचल मंडी के शक्ति सिंह

जागरण संवाददाता, मंडी:-हिमाचल प्रदेश जिला मंडी से प्रथम श्रेणी के क्रिकेटर रह चुके शक्ति सिंह इस बार आइपीएल सीजन-13 में रेफरी की भूमिका निभाएंगे। यूएई में 19 सितंबर से शुरू होने वाले इंडियन प्रीमियर लीग के लिए बीसीसीआई ने शक्ति सिंह को रेफरी नियुक्त किया है। शक्ति सिंह मंडी के भगवान मोहल्ला के रहने वाले हैं और वर्तमान समय में आबकारी विभाग में कार्यरत हैं। वह इससे पहले भी बीसीसीआई के लिए रेफरी रह चुके हैं। शक्ति सिंह के चयन से उनके समर्थकों में प्रसन्नता है। शक्ति सिंह दुबई, आबूधाबी और शारजाह में होने वाले आईपीएल मैचों में बतौर रेफरी निर्णय देंगे। आलराउंडर शक्ति सिंह ने 58 प्रथम श्रेणी क्रिकेट मैच खेले हैं और उन्होंने 200 विकेट ली हैं। ◆◆◆

शिरगुल देवता की जन्मस्थली शाया

... अनिल कुमार

लोकमान्य देवगाथा के अनुसार सिरमौर के सर्वमान्य देवता शिरगुल की जन्मस्थली वर्तमान में सिरमौर जिले की राजगढ़ तहसील के शाया चबरोण ग्राम में हुआ था। राजा भुकडू का एक ब्राहमण कन्या से विवाह हुआ जिनके तीन पुत्र हुए-शिरगुल, चन्द्रेश्वर और बिजर। राजा भुकडू के समाधिस्थ हो जाने के बाद शिरगुल और चन्द्रेश्वर अपने मामा लोज के साथ चले गए। दोनों भांजों के प्रति मामा का अपार स्नेह था लेकिन मामी सुरबा दोनों भाइयों के प्रति कम स्नेह रखती थी। दोनों भाई जो अभी बालक ही थे को मामी खूब परेशान करती थी और सुबह कुछ सतु देकर उन्हें गाय चराने ताली तिसरी चरागाह भेज देती थी। दोनों भाई मामी के व्यवहार से क्षुब्ध थे, फिर भी उन्होंने धैर्य नहीं छोड़ा। मामा लोग जब फागू के क्यार में धान की रोपाई कर रहा था तो दोपहर के समय मामी सुरबा सभी के लिए भोजन लेकर आई। जब सभी भोजन करने बैठे तो मामी ने सभी को घी के साथ सीड़ी खाने को दी किन्तु शिरगुल और चन्द्रशेखर को सतु दिए जिनमें मक्खियां लगी हुई थी।

मामी ने शिरगुल के मांगने पर पानी तक पीने को नहीं दिया। शिरगुल क्योंकि साधारण मानव तो थे नहीं। उनमें दैवीय गुण जन्म से विद्यमान थे। अत: उन्होंने अपनी देवी शक्ति से धरती पर पांव मारकर जलधारा प्रकट कर दी यह जलधारा अभी भी उन धान के खेतों में विद्यमान है। उन खेतों में केदार नामक किसम के धान की बिजाई होती थी। जो एक बार बीजने पर अनेक बार काटी जा सकती थी। इस धान की बिजाई एक विशेष परिवार के जिम्मे होती है, उन्हे फगेणा कहते हैं। मामी सुरबा शिरगुल के इन चमत्कारों से और चिढ़ गई अत: उसने चरागाह में जाने पर शिरगुल और चन्द्रशेखर को खाने के लिए दिए सतू में अन्य अखाद्य वस्तुए भी मिलाई। दोनों भाई डिलो कोईलमा गाय लेकर ताली तीसरी चरागाह की ओर चल दिए। डिलो कोईलमा एक विशेष प्रकार की गाय की प्रजाति है जो अधिक दूध देने वाली होती है, इनके सींग नीचे की ओर होते हैं। चरागाह में दोनों भाईयों ने खाने के लिए सतू निकाले तो देखा उनमें ढेर सारे कीड़े मिले हुए थे। इस पर देवी शक्ति सम्पन्न शिरगुल को बहुत क्रोध आया और उन्होंने अपनी शक्ति से उन कीड़ों को जहरीले कीड़ों में बदल कर वापिस अपनी मामी की ओर भेज दिया। विषैले कीड़ों ने मामी को डस लिया जिससे उसकी मृत्यु हो गई।

शिरगुल के जीवन से जुड़ी अनेकों ऐसी चमत्कारी घटनाओं का वर्णन है। यह सुरंग दूसरी तरफ मामा लोज के तक पहुंचती है। यही पत्थर एक गोलाकार लिंग है स्थानीय लोग इसे डिम्ब के नाम से जानते और पूजते हैं। चूड़धार में चूड़िया राक्षस का संहार करना आदि बड़ी-बड़ी घटनाएं उनके जीवन से जुड़ी हुई हैं। एक बार कलेसू नामक किसान को खेतों में हल चलाते समय तीन मूर्तियां प्राप्त हुई, तभी एक आकाशवाणी हुई कि सबसे बड़ी मूर्ति पैहक गांव शाया में, उससे छोटी बिजट के ननिहाल सराहां में और सबसे छोटी मूर्ति उनके ननिहाल मनौठा में स्थापित की जाएं तभी से शिरगुल महाराज, बिजट महाराज एवं दूधेश्वर महाराज की पूजा अर्चना हो रही है। एक जनश्रुति के अनुसार शिरगुल का बचपन का नाम बामनीबाहर था, वे महाभारत युद्ध में हारने वाले पक्ष दुधमा का वरदान था कि वे किसी से भी युद्ध में परास्त नहीं होंगे। साथ ही माता दुधमा ने उन्हें छलियां अर्थात् श्री कृष्ण से सावधान रहने को कहा था। भगवान श्री कृष्ण ने उनकी इच्छापूर्ति के लिए उनका सिर चूड़धार की तरफ उछाल दिया जिससे शिरगुल महाभारत के युद्ध का सारा हाल देख सके। तभी से इनका नाम शिरगुल प्रसिद्ध हुआ। कालान्तर में शिरगुल देव मूर्ति रूप में फागू की डमासे की क्यारी में प्रकट हुए। स्थानीय लोगों के स्वपन में आकर उन्होंने शाया गांव में मंदिर बनाने को कहा। लोगों ने मंदिर स्थापित कर पूजा अर्चना शुरू की। शिरगुल देवता के पुजारी ब्राहमण जाति न होकर देव जाति के हैं, जिन्हें नारू कहते हैं। एक अन्य कथा के अनुसार भगवान श्री कृष्ण के अवतार समय में उन्होंने अनेकों राक्षसों का वध किया जो प्रजा को सताते थे। लेकिन कुछ राक्षसों ने अपनी जान बचाकर वहां से अन्यत्र चले जाने पर श्री कृष्ण से क्षमा मांगकर वे उतर दिशा में इन पर्वत कन्दराओं की ओर आ गए। एक असुर चूड़धार से 7 मील दूर चावधार पर रहने लगा।

इसका नाम नेशशेरा था जो प्राय: मनुष्यों और पशुओं को भी तंग करता था। नेशशेरा नामक राक्षस ने सिरमौर रियासत के शागदा व शैया के मुखियों को आतंकित करना शुरू कर दिया। उसने जुब्बल, धरोच, बलसन तथा गोंठ पर भी आक्रमण करने शुरू कर दिए। ये सभी स्थान राजा मुकडू के अन्तर्गत थे। तंग आकर राजा मुकडू ने राज्य का कार्यभार मंत्री को सौंपकर स्वयं कश्मीर की ओर प्रस्थान किया। मुकडू नि:संतान था उसने वर्षों तक तपस्या की और अन्त में आकाशवाणी द्वारा उन्हें मनाकामना पूरी होने के लिए एक 'मोछा जग' महायज्ञ करने का आदेश मिला। फलस्वरूप उन्हें शिरगुल के रूप में पुत्र प्राप्त हुआ। ◆◆◆

नशे पर कबड्डी खिलाड़ी अजय ठाकुर से विशेष बातचीत

नशे से दूर रहने के लिए खेलों को बढ़ावा देना जरूरी

- बोले खेलों से युवा बना सकते हैं अपना बेहतर करियर
- सच्ची लग्न व मेहनत से कार्य करने पर जरूरी मिलती है सफलता
- कबड्डी विश्व कप में बतौर कप्तान निभा चुके हैं जिम्मेवारी
- हिमाचल को दिला चुके हैं विशेष पहचान

हिमाचल प्रदेश के नालागढ़ निवासी अजय ठाकुर कबड्डी विश्व कप में भारतीय टीम में बतौर कप्तान की जिम्मेदारी निभाकर राज्य को अलग पहचान दिला चुके हैं। बचपन से ही खेलों में रूचि रखने वाले कबड्डी खिलाड़ी अजय ठाकुर आजकल पुलिस विभाग में डीएसपी पद पर कार्यरत है।

एक विशेष बातचीत में पदमश्री व अर्जुन अवार्डी अजय ठाकुर ने बताया कि वर्तमान में युवाओं में नशे का प्रचलन बढ़ता जा रहा है, जो बेहद चिंतनीय है। उन्होंने कहा कि युवा को नशे से दूर रखने के लिए सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। साथ ही उन्होंने कहा कि युवाओं से नशे की लत छुड़ाने के लिए खेलों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि ज्यादा से ज्यादा युवा खेलों की तरफ ध्यान दें और अपना इसी क्षेत्र में उज्जवल भविष्य बना सके।

उन्होंने अपनी उपलब्धियों को सांझा करते हुए कहा कि जीवन में उन्होंने सच्ची लग्न व कड़ी मेहनत से सफलता हासिल की है। उन्होंने कहा कि उनका लक्ष्य अर्जुन अवार्ड प्राप्त करना था। पदमश्री अवार्ड मिलना उनके लिए किसी बड़े ड्रीम से म नहीं है। अर्जुन ठाकुर का कहना है कि मेरी बचपन से ही खेलों में विशेष रूचि रही है। साथ ही उनके माता-पिता का भी यही सपना था कि उनका बेटा भारत का प्रतिनिधित्व कर देश के लिए खेलें। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की और यह मुकाम पाया है। कबड्डी वर्ल्ड कप में वह भारतीय टीम में बतौर कैप्टन प्रतिनिधित्व कर चुके हैं, जो उनके लिए ही नहीं हिमाचल के लिए भी गौरव की बात है। मौजूदा समय में पुलिस विभाग में डीएसपी पद पर कार्यरत अजय ठाकुर का कहना है कि लक्ष्य को साधते हुए यदि सच्ची लग्न व निष्ठा के साथ मेहनत की जाए तो किसी भी मुकाम को प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने आज की पीढ़ी से आह्वान किया है कि नशे से दूर रहने के लिए वे अपना ज्यादा से ज्यादा ध्यान खेलों पर फोकस करें। इससे उन्हें दो फायदे मिलेंगे एक तो वे नशे से दूर रह सकेंगे, दूसरा खेलों में बेहतरीन प्रदर्शन करके भी वे अपना अच्छा करियर बना सकेंगे।

कोरोना काल में अपने पालतू कुत्ते का अंतिम संस्कार करती महिला

मंत्री सोशल मीडिया पर बताएंगे योजनाएं

राज्य ब्यूरो, शिमला : प्रधानमंत्री कार्यालय (पीएमओ) से मंत्रियों के कामकाज पर नजर रखी जाती है। भाजपा शासित राज्यों में सरकार के प्रत्येक क्रियाकलाप डिजिटल मीडिया पर प्रचारित व प्रसारित होते हैं। पीएमओ की ओर से यह सुनिश्चित करने के लिए कहा गया है कि सरकार अपनी प्रत्येक योजना की जानकारी सोशल मीडिया पर प्रचारित करेगी। इसके लिए प्रदेश में हर मंत्री को सोशल मीडिया का इस्तेमाल करना पड़ेगा।

प्रदेश सरकार के जो मंत्री आधुनिक प्रचार तंत्र का इस्तेमाल नहीं कर रहे थे, उन्हें सोशल मीडिया पर सक्रिय होने के निर्देश दिए गए हैं। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण जल शक्ति मंत्री महेंद्र सिंह ठाकुर हैं। वह भी सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर आए हैं। कुछ दिन पहले उनके कार्यालय में एक कर्मी सोशल मीडिया अकाउंट हैंडल करने के लिए नियुक्त किया गया है। इसी तरह सरकार में शामिल हुए तीन नए मंत्रियों को भी डिजिटल प्रणाली का सदुपयोग करने के लिए नियुक्ति करनी होगी। उन्हें भारत सरकार की योजनाओं के संबंध में ट्वीट करना और फेसबुक पेज व इंस्टाग्राम पर अपने विभागों की योजनाओं की जानकारी देना जरूरी है। सरकारी विभागों की योजनाओं से लाभान्वित होने वाले लोगों, महिलाओं, युवाओं और वर्ग विशेष की जानकारी साझा करनी होगी ताकि उससे ग्रामस्तर तक आम लोग और पार्टी कार्यकर्त्ता अवगत हो सकें।

प्रदेश में शिक्षा मंत्री गोविंद सिंह ठाकुर सोशल मीडिया पर सबसे सक्रिय समझे जाते हैं। इससे पहले तक पूर्व शिक्षा एवं संसदीय कार्यमंत्री सुरेश भारद्वाज से हर शिक्षक व आम आदमी तक जानकारी पहुंचती थी।

उद्योग मंत्री बिक्रम ठाकुर व पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास मंत्री वीरेंद्र कंवर की सोशल मीडिया पर मौजूदगी नजर आती थी। विभागों में फेरबदल होने के बाद मंत्रियों को नए सिरे से अपना कामकाज सोशल मीडिया पर दिखाना होगा।

निर्देश

- मंत्रियों को सोशल मीडिया पर सक्रिय होने के निर्देश
- महेंद्र सिंह ठाकुर भी आए सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर

सीएम का फेसबुक पेज सबसे लोकप्रिय

मुख्यमंत्री के फेसबुक पेज पर सरकार की योजनाओं की जानकारी त्वरित प्राप्त होती है। उनका फेसबुक पेज सबसे लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त मुख्यमंत्री का ट्विटर हैंडल प्रत्येक घटना पर प्रतिक्रिया करता है। सीएम फेसबुक पेज व उनके ट्विटर हैंडल पर रोजाना 40 से 50 लाख लोगों की पहुंच होती है। इसी तरह प्रत्येक मंत्री को भी सक्रियता से सोशल मीडिया पर पैठ बनानी होगी।

इस्लामिक जिहादियों का अंतर्राष्ट्रीय षड़यंत्र है हलालोनॉमिक्स

पवन कुमार

हलालोनॉमिक्स विश्व को आतंक की आग में धकेलने वाले सभी इस्लामिक जिहादों की जननी है। सम्पूर्ण विश्व में पूर्वनियोजित व संगठित तरीके से चलाए जाने वाले हलाल के माध्यम से विश्व के विविध देशों के साथ भारत के असंख्य गैर मुस्लिम लोगों का ना सिर्फ रोजगार छीना जा रहा है अपितु आतंकी गतिविधियों को विविध प्रकार से वित्त-पोषण करते हुए दुनिया की शान्ति व मानवता पर हमलों को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। प्रसिद्ध समाज सेवी व हलालोनॉमिक्स के विशेषज्ञ सरदार श्री रवि रंजन सिंह ने वक्ता के रूप में बोलते हुए आज यह भी कहा कि अब समय आ चुका है कि विश्व को एक जुट कर हलालोनॉमिक्स के आतंक से मुक्त किया जाए तथा इसका शुभारम्भ भारत की पुण्य भूमि से हो।

हलालोनॉमिक्स से राष्ट्रीय सुरक्षा, व्यापार तथा धार्मिक अधिकारों का हनन विषय पर अपना वक्तव्य देते हुए सेवानिवृत्त आईएएस डॉ. सुरेन्द्र घोंक्रोक्टा ने कहा कि हलाल के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक मान बिन्दुओं तथा श्रम कानूनों की धज्जियां उड़ाते हुए वैश्विक शान्ति व सुरक्षा को गम्भीर खतरे स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहे हैं। इसके माध्यम से दुनिया भर के गैर मुस्लिम समाज से भी जबरन जजिया बसूल कर उसी धन से उन पर आतंकी हमलों को प्रोत्साहित किया जा रहा है। अनेक देशों में यह बात जांच में सिद्ध हो चुकी है। वेबीनार में हलालोनॉमिक्स के कानूनी पक्ष पर प्रकाश डालते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता तथा सर्वोच्च न्यायालय में इस विषय पर लड़ाई लड़ने वाले एडवोकेट श्री राहुल राज मालिक ने कहा कि हलालोनॉमिक्स कहें या हलाल, दोनों ही ना सिर्फ असंवैधानिक अपितु गैर कानूनी कार्य हैं। किन्तु दुर्भाग्य से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही मुस्लिम तुष्टीकरण की सरकारी नीतियों के कारण इस अनैतिक कार्य को बल मिला। राष्ट्रीय हलाल नियंत्रण मंच द्वारा आयोजित इस वेबीनार में सैकड़ों बुद्धिजीवी, समाज सेवी, जनवादी और राष्ट्रवादी चिन्तक व समाज शास्त्रियों के साथ असंख्य देशवासियों ने भी भाग लिया। ◆◆◆

किस की थाली में छेद

... अनिल कुमार

राज्यसभा सांसद एवं अपने दौर की प्रख्यात अभिनेत्री जया बच्चन नशे के सिंडिकेट और तस्करी के मुद्दे पर परेशान क्यों है? वह सम्पूर्ण बॉलीवुड को बदनाम करने की कोशिशों पर शर्मिंदा क्यों महसूस कर रही है? उन्होंने तो कुछ गलत नहीं किया। युवा स्टार सुशांत सिंह राजपूत की अप्राकृतिक मौत हुई, तो जांच का दायरा बढ़ता गया और एनसीबी को भी शामिल किया गया। कुछ दिनों की जांच में ही इतने खुलासे हुए हैं कि डेढ़ दर्जन 'नशेबाज' जेल की सलाखों के पीछे हैं। अंततः जो मासूम होगा, वह सजा-मुक्त, आरोप-मुक्त हो सकता है। दोषी वो भी हैं। सुशांत सिंह केस के मद्देनजर जो नाम उभर कर सतह पर आए हैं और ड्रग्स सिंडिकेट के सदस्य के तौर पर उनकी पहचान स्थापित हो रही है, लग रहा है मानो मुंबई की गली-गली में नशे का माफिया मुस्तैद है और वह फिल्मों की मौजूदा और खूबसूरत पीढ़ी को नशे के गर्त में धकेल कर, उन्हें बर्बाद करने पर आमादा है। यदि इन नापाक गठजोड़ों के ढक्कन खुलते हैं और बॉलीबुड नहीं हैं। बॉलीवुड की परिभाषा और दुनिया बेहद व्यापक है। नए दौर के 'सुपर स्टारों' की चर्चा से हम बच रहे हैं, क्योंकि उन पर नशे की परछाइयां हैं। समय उनका अपराध या मासूमियत तय करेगा। जया बच्चन की पैरोकारी अपनी जगह है और लोकसभा सांसद रविकिशन की पीढ़ीगत पीढ़ा अपनी जगह महत्वपूर्ण है। रविकिशन ने भी करीब 650 फिल्मों में काम किया है और वह भोजपुरी सिनेमा के 'सुपर स्टार' भी रहे। पृष्ठभूमि के हैं, तो क्या इसी आधार पर 'मायानगरी' के पापों और अपराधों को छिपा कर रखा जाए? बॉलीवुड देश को सबसे अधिक टैक्स देने वालों में एक है, तो क्या 'मौत की पार्टियां' सजाने की छूट दे दी जाए? जया बच्चन गलत पैरोकारी कर रही हैं। यदि कोई चेहरा उनकी संगत को नकारता है, तो उसे स्वीकृति नहीं मिलती। इन काले अंधेरों को खंगालना बहुत जरूरी है। बॉलीवुड से पांच लाख से ज्यादा लोग जुड़े हैं, जिनमें औसतन मजदूर और कार्यकर्ता स्तर के कर्मचारी हैं। देश के करोड़ों नागरिक टिकट खरीद कर बॉलीवुड की 'अमीरी' तय करते हैं। मुंबई का एक पार्टीदार समूह ही बॉलीवुड नहीं है। ड्रग्स सिंडिकेट और उसका सपनों का संसार दोनों ही आपराधिक हैं, लिहाजा सजा जरूर मिलनी चाहिए। इससे किसी की थाली में छेद नहीं होगा। क्या बच्चन परिवार या किसी अन्य ने उनके लिए 'थाली' सजाई और परोसी थी? जया बच्चन ने किस थाली और छेद की बात की है?बॉलीबुड की प्रख्यात 'ड्रीम गर्ल रहीं और लोकसभा सांसद हेमा मालिनी का मानना है कि फिल्म इंडस्ट्री मे सभी अपनी नियति के साथ आते हैं। फिर मेहनत और प्रतिभा के बल पर 'सुपर स्टार' भी बनते हैं। चूंकि मौजूदा दौर के कुछ नेता-सांसद बॉलीवुड की पृष्ठभूमि के हैं, तो क्या इसी आधार पर 'मायानगरी' के पापों और अपराधों को छिपा कर रखा जाए?बॉलीवुड देश को सबसे अधिक टैक्स देने वालों में एक है, तो क्या 'मौत की पार्टियां' सजाने की छूट दे दी जाए? जया बच्चन गलत पैरोकारी कर रही हैं। युवा पीढ़ी के अधिकांश अदाकारों ने टीवी चैनलों पर सरेआम खुलासा किया है कि बॉलीवुड पर ड्रग्स के अंधेरे साए मंडराते रहे हैं। यदि कोई चेहरा उनकी संगत नकारता है, तो उसे स्वीकृति नहीं मिलती। बॉलीवुड से बहुत लोग जुड़े हैं, जिनमें औसतन मजदूर और कार्यकर्ता स्तर के कर्मचारी हैं। देश के करोड़ों नागरिक टिकट खरीद कर बॉलीवुड की 'अमीरी' तय करते हैं। मुंबई का एक पार्टीदार समूह ही बॉलीवुड नहीं है। ड्रग्स सिंडिकेट और उसका सपनों का संसार दोनों ही आपराधिक हैं, लिहाजा सजा जरूर मिलनी चाहिए। इससे किसी की थाली में छेद नहीं होगा। ◆◆◆ **साभार : दिव्य हिमाचल**

आंखों की नमी चुरा रहे फेस मास्क

कोरोना वायरस से बचाव के लिए इन दिनों फेस मास्क पहनना जरूरी हो गया है। इससे वायरस का प्रसार थम भी जाए, मगर लगातार मास्क पहनने से लोगों में एक नई समस्या सामने आ रही है। मास्क लोगों के आंखों की नमी चुरा रहा है। वाटरलू विश्वविद्यालय में ऑप्टोमेट्री एंड विजन साइंस स्कूल के प्रोफेसर लिंडन जोन्स के मुताबिक वैज्ञानिकों ने इस स्थिति को एमएडीई मास्क एसोसिएटिड ड्राई आई नाम दिया है। उन्होंने कहा कि लोगों में शुष्क नेत्र रोग के मामले बढ़ रहे हैं। दुनियाभर में लाखों लोग जो पहले से ही इस समस्या से जूझ रहे हैं, उनमें इसके लक्षण और ज्यादा बिगड़ गए हैं। ऐसे रोगी जिनमें पहले से इसके लक्षण नहीं थे, उनमें भी बदलाव दिखाई दे रहे हैं। खासकर कुछ पढ़ने या लंबे समय तक डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करने के दौरान इनमें इजाफा देखा जा रहा है। वैज्ञानिकों ने चिंता जाहिर करते हुए कहा है कि आंखों के लगातार शुष्क रहने से उन्हें बार-बार छूने की आदत बढ़ सकती है। इससे कोरोना संक्रमण का खतरा भी बढ़ सकता है।

प्रोफेसर जोन्स ने कहा कि मुंह, नाक और आंखों को छूने से कोरोना वायरस प्रसार की संभावना बढ़ जाती हैं। वैज्ञानिकों ने सुझाव दिया है कि आंखों के शुष्क होने पर तुरंत डाक्टर से जांच कराएं और बताए गए नियमों का पालन करें। ऐसे में बैठने का वक्त कम करें। डिजिटल उपकरण पर काम करते हुए बीच-बीच में ब्रेक लेते रहें।

दत्तोपंत ठेंगड़ी : एक श्रेष्ठ चिंतक, संगठक और दीर्घदृष्टा

... डॉ. मनमोहन वैद्य

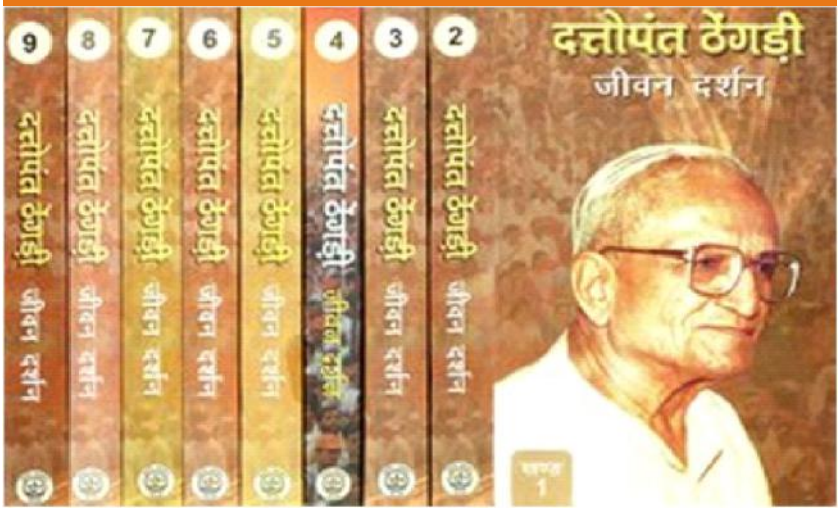

जिस समय स्वर्गीय दत्तोपंत ठेंगड़ी ने भारतीय मजदूर संघ की स्थापना की वह साम्यवाद के वैश्विक आकर्षण, वर्चस्व और बोलबाले का समय था। उस परिस्थिति में राष्ट्रीय विचार से प्रेरित शुद्ध भारतीय विचार पर आधारित एक मजदूर आंदोलन की शुरुआत करना तथा अनेक विरोध और अवरोधों के बावजूद उसे लगातार बढ़ाते जाना यह पहाड़ सा काम था। श्रद्धा, विश्वास और सतत परिश्रम के बिना यह काम संभव नहीं था। तब उनकी कैसी मन:स्थिति रही होगी यह समझने के लिए एक दृष्टांत-कथा का स्मरण होता है-

अभी बसंत की बयार बहनी शुरू भी नहीं हुई थी।

आम पर बौर भी नहीं आया था।

तभी सर्द पवन के झोंको के थपेड़े सहता हुआ एक जन्तु अपने बिल में से बाहर निकला।

उसके रिश्तेदारों ने उसे बहुत समझाया कि अपने बिल में ही रहकर आराम करो, ऐसे समय बाहर निकलोगे तो मर जाओगे। पर उसने किसी की एक न सुनी।

बड़ी ही मुश्किल से वह तो आम्रवृक्ष के तने पर चढ़ने लगा।

ऊपर आम की डाल पर झूमते हुए एक तोते ने उसे देखा।

अपनी चोंच नीचे झुकाते हुए उसने पूछा, 'अरे ओ जन्तु, इस ठंड में कहाँ चल दिए?'

'आम खाने' जंतु ने उत्तर दिया।

तोता हँस पड़ाद्य उसे वह जन्तु मूर्खों का सरदार लगा।

उसने तुच्छता से कहा, 'अरे मूर्ख, आम का तो अभी इस वृक्ष पर नामोनिशान नहीं है। मैं उपर नीचे सभी जगह देख सकता हूँ न!'

'तुम भले ही देख सकते होगे' जंतु ने अपनी डगमग चाल चलते हुए कहा, 'पर मैं जब तक पहुंचूंगा तब वहाँ आम अवश्य होगा।'

इस जन्तु के जवाब में किसी साधक की सी जीवनदृष्टि है।

वह अपनी क्षुद्रता को नहीं देखता। प्रतिकूल संजोगों से वह घबराता नहीं है।

ध्येय का कोई भी चिन्ह दिखाई नहीं देने के बावजूद उसे अपनी ध्येयप्राप्ति के विषयमें सम्पूर्ण श्रद्धा है।

अपने एक-एक कदम के साथ फल भी पकते जायेंगे इस विषय में उसे रत्तीभर संदेह नहीं है। उसके रिश्तेदार या तोता-पंडित चाहे कुछ भी कहें उसकी उसे परवाह नहीं है।

उसके अंतर्मन में तो बस एक ही लगन है और एक ही रटन-

'हरि से लागी रहो मेरे भाई, तेरी बनत बनत बन जाई।'

और आज हम देखते हैं की भारतीय मजदूर संघ भारत का सर्वाधिक बड़ा मजदूर संगठन है। अच्छे संगठक का यह गुण होता है कि आप कितने भी प्रतिभावान क्यों ना हों, अपने सहकारियों के विचार और सुझाव को खुले मन से सुनना और योग्य सुझाव का सहज स्वीकार भी करना। ठेंगडी जी ऐसे ही संगठक थे। जब श्रमिकों के बीच कार्य प्रारम्भ करना तय हुआ तब उस संगठन का नाम 'भारतीय श्रमिक' संघ ऐसा सोचा था। परंतु जब इससे सम्बंधित कार्यकर्ताओं की पहली बैठक में यह बात सामने आयी कि समाज के जिस वर्ग के बीच हमें कार्य करना है उनके लिए 'श्रमिक' शब्द समझना आसान नहीं होगा। कुछ राज्यों में तो इसका सही उच्चारण करने में भी दिक्कत आ सकती है, इसलिए 'श्रमिक' के स्थान पर 'मजदूर' इस आसान शब्द का उपयोग करना चाहिए। उसे तुरंत स्वीकार किया गया और संगठन का नाम 'भारतीय मजदूर संघ' तय हुआ।

श्रम क्षेत्र में अनावश्यक संघर्ष बढ़ाने वाले असंवेदनशील नारे

'हमारी माँगे पूरी हो, चाहे जो मजबूरी हो' के स्थान पर उन्होंने कहा 'देश के लिए करेंगे काम, काम के लेंगे पूरे दाम'। यानी, श्रम के क्षेत्र में भी सामंजस्य और राष्ट्रप्रेम की चेतना जगाने का सूत्र उन्होंने नारे में इस छोटे से बदलाव से दे दिया। भारतीय मजदूर संघ और भारतीय किसान संघ इस संगठनों के अलावा अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, स्वदेशी जागरण मंच, प्रज्ञा प्रवाह, विज्ञान भारती आदि संगठनों की रचना की नींव में ठेंगड़ी जी का योगदान और सहभाग रहा है। उन्होंने भारतीय कला दृष्टि पर जो निबंध प्रस्तुत किया वह आगे जा कर संस्कार भारती का वैचारिक अधिष्ठान बना। श्री ठेंगडी जी के समान एक श्रेष्ठ चिंतक, संगठक और दीर्घदृष्टा नेता के साथ रहकर, संवादकर, उनका चलना, उठना-बैठना, उनका सलाह देना यह सारा प्रत्यक्ष अनुभव करने का, सीखने का सौभाग्य मिला। श्री ठेंगड़ी जी की जन्मशती के मंगल अवसर पर उनकी पावन स्मृति को मेरी विनम्र श्रद्धांजली। ◆◆◆

दो दशकों से गरीब जरूरतमंदों की सेवा में रत आईजीएमसी सेवाभारती

बीमारी व्यक्ति को मानसिक रूप से कमजोर कर देती है और व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर भी हो तो मन:स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है। अपनी नाम मात्र की जमा पूंजी, जमीन से भी बीमारी के कारण हाथ धोना पड़ता है। ऐसे लोगों को संबल प्रदान कर रही है, इंदिरा गांधी मेडीकल कॉलेज में कार्यरत सेवाभारती।

पहाड़ी क्षेत्रों में पेड़ से गिरने के मामले आते रहते हैं। पेड़ पर से पांव फिसलकर नीचे गिरने के कारण स्पाइन इंजरी होने के मामले अस्पतालों में पहुंचते हैं। सड़क दुर्घटनाओं में चोट लगने और गंभीर बीमारियों से ग्रसित लोगों को बेड सोर (शरीर में जख्म होना) हो जाते हैं। ऐसे में सामान्य बिस्तर के बजाय अल्फाबेड की जरूरत रहती है। किसी भी मरीज के लिए एक अल्फाबेड खरीदने का मतलब है कि पांच हजार रुपये का खर्च। कुछ दिनों की आवश्यकता के लिए इसे खरीदना सबके लिए संभव नहीं होता।

सेवा भारती द्वारा जरूरतमंद गरीब परिवारों को अल्फाबेड उपलब्ध करवाया जाता है। अस्पताल के साथ ही यदि चिकित्सकों ने घर पर इस बिस्तर पर आराम करने की सलाह दी है तो मरीज अल्फाबेड को घर ले जा सकता है। शुल्क के नाम पर केवल 100 रुपये का भुगतान करना होता है। अस्पताल में प्रतिदिन ऐसे मरीज आते हैं, जिन्हें अल्फाबेड पर लेटने की सलाह दी जाती है। किसी भी मरीज के साथ अभिभावक को भटकने की जरूरत नहीं है, केवल सेवा भारती से संपर्क करना होता है।

वर्तमान में सेवा भारती के पास 35 अल्फाबेड उपलब्ध हैं, जो जरूरतमंदों को दिये जाते हैं। इसके अलावा कम दरों पर एंबुलेंस सेवा भी संचालित की जा रही है। सेवा भारती के पास 300 सामान्य बिस्तर भी उपलब्ध हैं, जो अस्पताल में मरीजों को उपलब्धा करवाए जाते हैं।

जरूरतमंदों को पहुंच रहा लाभ

एक महीने से अधिक का समय हो गया है, मैं इस बिस्तर का उपयोग कर रहा हूं। रीढ़ की हड्डी से जुड़ी परेशानी है। बिस्तर से उठकर बैठना संभव नहीं है। इस बिस्तर को वापस करने को लेकर किसी ने कुछ नहीं पूछा है।

कर्म चंद, तत्तापानी।

◆◆◆

मेरे छोटे भाई गगन को एक टांग में गैंगरीन हो गया था। एक के बाद एक तीन आप्रेशन हुए। इस दौरान अस्पताल में चिकित्सकों ने अल्फाबेड का उपयोग करने की सलाह दी। बारह दिनों तक अस्पताल में रहते हुए इस बिस्तर का इस्तेमाल किया। हमारे लिए ऐसा बिस्तर खरीदना संभव नहीं था।

भूमि चंद, सुजानपुर-हमीरपुर।

◆◆◆

मेरी माता को बेड सोर हो गए थे और शिमला में उनका आप्रेशन हुआ। बेड सोर में चिकित्सकों ने इस तरह के बिस्तर पर सोने की सलाह दी थी। कुछ दिनों के लिए ऐसा बिस्तर खरीदना मुमकीन नहीं था। केवल एक सौ रुपये में अल्फाबेड मिल गया।

ज्योति देवी, रामपुर, जिला शिमला

◆◆◆

केवल जन सेवा

हमें लगा कि अस्पताल में आने वाले हर दसवें मरीज को चिकित्सक अल्फाबेड पर लेटने की सलाह देते हैं। गरीब लोग कुछ दिनों के लिए इस प्रकार का बिस्तर खरीदने की स्थिति में नहीं होते। इसलिए वर्ष 2000 में सेवा भारती ने दस अल्फाबेड खरीदे। मरीज को जरूरत हो तो वह अल्फाबेड को घर ले जा सकता है और जितना समय जरूरत है, रख सकता है। सिक्योरिटी के तौर पर पंद्रह सौ रुपये लेते हैं और मरीज अथवा परिजन जैसे ही इसे लौटाते हैं, अग्रिम धनराशि वापस कर दी जाती है। अल्फाबेड के अतिरिक्त अस्पताल में मरीजों के साथ आने वाले परिजनों को सोने के लिए तीन सौ बिस्तर और टांग में चोट ग्रस्त मरीजों के लिए बैसाखियों की व्यवस्था की गई है।

नरेंद्र ठाकुर, सचिव, सेवा भारती इंदिरा गांधी अस्पताल।

क्या होता है अल्फाबेड

अलाबेड में हवा का दवाब कम ज्यादा होता रहता है। यह बिजली से संचालित होता है। इसमें लगातार हवा का दवाब घटता-बढ़ता रहता है। ऐसे में मरीज एक स्थिति में नहीं रहता। परिणामस्वरूप बेड सोर और स्पाइन इंजरी वाले मरीजों को ऐसा बिस्तार उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

74 हजार किसान कर रहे 3600 हेक्टेयर में खेती, बिना सर्टिफिकेशन के भी दाम में 2.46 की बढ़ोतरी

प्राकृतिक विधि से सस्ता हुआ सेब उत्पादन

हिमाचल दस्तक ब्यूरो। शिमला

हिमाचल की आर्थिकी में सेब बागवानी का अहम योगदान है और हर साल सेब का लगभग 4000 से 4500 करोड़ रुपये का कारोबार होता है, लेकिन बढ़ती लागत बागवानों के लिए चिंता का विषय बनती जा रही थी। अब बागवानों के लिए प्राकृतिक खेती वरदान सिद्ध हो रही है। दो वर्ष पहले कृषि और बागवानी लागत में लगातार हो रही बढ़ोतरी को देखते हुए प्रदेश सरकार की ओर से शुरू की गई सुभाष पालेकर प्राकृतिक खेती न सिर्फ कृषि क्षेत्र में बेहतरीन उदाहरण पेश कर रही है, बल्कि बागवानी के क्षेत्र में भी किसानों में बड़ी तेजी से ख्याति पा रही है। वर्तमान में प्रदेश में 6802 बागवान प्राकृतिक खेती को अपनाकर न सिर्फ अपनी लागत को कम रहे हैं, बल्कि फलोत्पादन में बढ़ोतरी से उनका मुनाफा बढ़ा है। इस विधि से 74 हजार से अधिक किसान 3600 हेक्टेयर भूमि पर खेती कर रहे है। सेब बागवानी में बीमारियों से फल एवं पौधों को बचाने के लिए वर्तमान में बागवानी विश्वविद्यालय के अनुमोदन अनुसार 8 से 12 तक स्प्रे किए जाते हैं। इससे बागवानी की लागत में बढ़ोतरी होती है। लेकिन प्राकृतिक खेती विधि से सेब उत्पादन कर रहे बागवानों के ऊपर किए गए सर्वे के अनुसार इस खेती विधि में बागवानों का शुद्ध मुनाफा 27.4 प्रतिशत बढ़ा है और उनका खर्चा 43 फीसदी तक घटा है। सेब के बाजार भाव में बिना सर्टीफिकेशन के 2.46 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है।

स्कैब नियंत्रित, असामयिक पतझड़ भी रुका

बागवानी विशेषज्ञ अधिकारी डॉ. विनोद शर्मा का कहना है कि प्राकृतिक खेती के बगीचों में स्कैब रोग का सेब की पत्तियों पर केवल 9.2 फीसदी और फल पर 2.1 फीसदी ही प्रभाव दर्ज किया गया है। रासायनिक विधि में यह 14.2 और 9.2 फीसदी दर्ज किया गया है। इसके अलावा प्राकृतिक खेत के पौधों में आकस्मिक पतझड़ केवल 12.2 फीसदी, जबकि रासायनिक में 18.4 फीसदी अधिक देखा गया है।

अभी तक 6802 किसान प्राकृतिक खेती कर रहे हैं। कई ऐसे किसान है, जो 40 बीघा क्षेत्र में बागवानी कर रहे हैं। ऐसे भी किसान हैं जो हर साल बागवानी के लिए लाखों का खर्च करते थे, लेकिन प्राकृतिक खेती को अपनाने के बाद उनका खर्चा हजारों में पहुंच चुका है।

-प्रोफेसर राजेश्वर सिंह चंदेल,
कार्यकारी निदेशक, प्राकृतिक खेती खुशहाल किसान योजना

किसान अपना प्याज ₹5 किलो बेचता है और हमारी थाली में पहुंचते ही वह ₹40 किलो हो जाता है और तकलीफ अब उन ₹35 खाने वाले दलालों को है किसानों को नही। किसान बिल पास होने की बधाई

सैअर दी संग्राद

पाअड़ी कबता

सब्बो संग्रदीयो अपणे म्हाचली, त्यारां सौगी मणांदे
अषिवन मीअने दीआ संग्रदीजो, सेअर दी संग्राद गलांदे
मतीयां भांती दे जनांनीयां मणांदी,
पकवाण पतरोड़े, पकोडु, गुलगुले,
ववरू, खीर बन्डदीयां घरेघरे पाईचारा बढादीयां,
सब्बो चाएं- चाएं खांण
पुजदीयां सेअरी जो दीया थालीयाच जगादीयां,
छलीयां, गलगल, खरोट
सत्त पांते पकबाना सौगी, चौंकीयां अन्दर,
वरांदे बणी बणी सजांदीयां
खिड़दे किसाणां रे दिलडु, फसलां पक्की जदीयां
सैअर री संग्रादी बड़े ध्याड़े, फसलां कटणे तांई बड लांदीयां
नौईयां लाडी़या काअला म्हीना कटी,
प्योकीयां ते सोरेयां घरे ओदीयां
सुरू हुन्दे सुभ कम्म, पाठ, अवन, कुडमांई,
याह इन्हा सुभ कम्मा रा माहणु करदे जी मता चाअ
मुक्की आंदी बरसात खडडां- नालु ओई आंदे सांत,
पुछणां जांदे माहणु इक्क- दुए रा सुख- सांत
धियां घ्यांणी जो सद्दे मते छैल मज़े लगदे
निक्के हुणां लगदे धयाड़े, हुणां लगदी स्याले री सरूआत
सब्बो माहणु जो, सैअर री संग्रादी री सुख- सांत

सुषमा देवी, भरमाड़, काँगडा, हि.प्र.

नव जीवन

चलो चलते हैं फिर से
जीवन की तलाश में
किस अजनबी शहर की
अनजान राहों पर।
चलो फिर से बटोरते हैं
उन ख्वाबों को
जो टूट कर बिखर गए थे
किसी अनजान शख्स की
बिखरी हुई याद में।
चलो फिर से
उन दिलों को
धड़कना सिखाते हैं,
जो टूट कर बिखर गए थे
मरती हुई
इंसानियत को देखकर।
चलो फिर से
नवीन जीवन की
तलाश करते हुए,
मानव मे सच्ची मानवता के
भाव भरते हैं।

राजीव डोगरा
'विमल', कांगड़ा हि.प्र

हम होंगे कामयाब

बीमारी बहुत भयंकर यह
बुनकर बैठी जाल
समझ नहीं पाया कोई इसकी कपटी चाल
फंस गए चाल में अब इसकी बेहिसाब
हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब।
पहले भी कई बार हमारे सामने
ऐसी परिस्थितियां आई हैं
हमने हंसते-हंसते उनसे
लड़कर कामयाबी पाई है
मिल कर हम पहले भी हुए थे कामयाब
हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब।
कारोना जैसी महामारी का
बेशक नहीं है कोई हल
लंबी लड़ाई लड़नी हमको
नहीं है काफी पल दो पल
रहन-सहन में लाना पड़ेगा अब हमको बदलाब
हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब
कोई भी हो मुसीबत
ज्यादा दिन नहीं चलती है
सुबह का सूरज निकलता है
तो सांझ अवश्य ढलती है
तेरा भी कोरोना जल्दी उतरेगा नकाब
हम होंगे कामयाब, हम होंगे कामयाब,

रविंद्र कुमार शर्मा,
घुमारवीं, बिलासपुर हि प्र

कुल्लू का शरण गांव देश के चुनिंदा 10 हैंडलूम गांवों में शामिल

हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिला का शरण गांव अब देश के दस हैंडलूम गावों में शामिल हो गया है। नेशनल हैंडलूम डे के अवसर पर इसका शुभारंभ भारत सरकार में वस्त्र मंत्री स्मृति ईरानी ने दिल्ली से वर्चुअल कार्यक्रम के माध्यम से किया। कार्यक्रम में शिमला से प्रदेश के मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर भी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। धरोहर गांव नग्गर के साथ लगते शरण गांव की देश में एक अलग पहचान बनेगी।

भारत सरकार तथा हिमाचल सरकार की संयुक्त पहल पर क्राफ्ट हैंडलूम विलेज के रूप में शरण गांव को विकसित किया जा रहा है। केंद्र सरकार ने देशभर के दस गांवों को क्राफ्ट हैंडलूम विलेज के रूप में चुना है, जिनमें हिमाचल का यह शरण गांव भी शामिल है। शरण गांव को हैंडलूम विलेज बनाने का उद्देश्य गांव को हैंडलूम पर्यटन के रूप में विकसित करना है।

गांव को हैंडलूम विलेज का दर्जा मिलने के साथ ही यह पर्यटकों को आकर्षित करने में सहायक सिद्ध होगा। हिमाचल प्रदेश के शरण गांव के अलावा जम्मू कश्मीर, केरल, गुजरात, उत्तर प्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों के गांवों को शामिल किया गया है, जिन्हें हैंडलूम विलेज के रूप में विकसित किया जाएगा। हैंडलूम को बढ़ावा देने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने योजना बनाई है।

गांव के हैंडलूम को मिलेगी अलग पहचान

शरण गांव में प्राचीन धरोहर के रूप में कई वस्तुएं अभी भी अपनी प्राचीनता और ऐतिहासिकता के साथ वैसी ही विद्यमान हैं, जैसे प्राचीन काल में रही होंगी। धरोहर गांव नग्गर के साथ लगता शरण गांव पुरानी शैली के मकानों और परंपरागत वेषभूषा से परिपूर्ण है। यहां के लोग भेड़ पालन से जुड़े हैं। ऊन का उत्पादन होने के कारण यहां ऊनी धागा ज्यादा होता है, लोग खड्डियों पर पट्टू, चादर, दोहड़ू, शॉल व पट्टी के पारंपरिक उत्पादनों की बुनाई भी करते हैं, जिनकी काफी अधिक मांग रहती है। गांव के उत्पादकों को शॉल का जीआई मार्क भी मिला हुआ है, जिस कारण इसकी विश्व में पहचान बनी हुई है।

पारम्परिक कला और आधुनिकता के सम्मिश्रण से निखरेगी कला

गांव में प्राचीन कला का इतिहास तो बहुत पुराना है, लेकिन अब इसमें आधुनिकता का सम्मिश्रण कर कला का विकास किया जाएगा।

यहां पर एक सुविधा केंद्र की स्थापना की जा रही है। तीन मंजिला भवन में बुनाई विभाग, म्यूजियम, पुस्तकालय, ओपन कैफेटेरिया आदि बनाया जाएगा। केंद्र में पर्यटक स्वयं बुनाई करने का अनुभव एवं जानकारी भी ले सकेंगे। केंद्र सरकार से 1 करोड़ 30 लाख रुपए और राज्य सरकार की ओर से करीब 15 लाख रुपए का प्रावधान किया गया है। इससे गांव के बुनकरों को आधुनिक हथकरघे, सोलर लाईट व व्यक्तिगत वर्कशैड प्रदान किए जा रहे हैं।◆◆◆

गोहत्या पर बैन लगाने की तैयारी में महिंदा राजपक्षे

श्रीलंका के प्रधानमंत्री महिंदा राजपक्षे की सरकार ने देश में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया है। राजपक्षे ने अपनी सताधारी श्रीलंका पोडुजना पेरूमना के संसदीय समूह को बताया है कि सरकार जल्द ही इस पर विधेयक लेकर आएगी। उन्होंने कहा है कि इस पर काफी पहले से विचार था, लेकिन कानून बन नहीं सका। हालांकि, देश में गाय का मांस खाने पर रोक नहीं होगी और इसे आयात किया जा सकेगा। राजपक्षे देश में बुद्ध शासन, धार्मिक और सांस्कृति मामलों के मंत्री हैं। अभी उन्होंने यह साफ नहीं किया है कि वह कब इस लेकर प्रस्ताव पेश करेंगे। श्रीलंका में बड़ी आबादी बुद्ध धर्म मानने वाले लोगों की है। देश में 99 फीसदी लोग मांसाहारी हैं। हालांकि, हिंदू और बुद्ध धर्म को मानने वाले लोग बीफ, गाय का मांस नहीं खाते हैं।

रिपोर्ट्स की मानें तो बुद्ध समुदाय के लोग गाय की हत्या पर रोक लगाने की मांग लंबे समय से कर रहे थे। राजपक्षे ने साफ किया है कि देश में भले ही गोहत्या पर बैन होगा, लेकिन आयात पर रोक नहीं होगी। इसका मतलब है कि मांस खाने पर रोक नहीं है। रिपोर्ट्स के मुताबिक राजपक्षे के इस प्रस्ताव का सताधारी पार्टी के किसी सदस्य ने विरोध भी नहीं किया है। पार्टी ने भी हमेशा इसे लेकर साफ रूख रखा है कि वह वोटबैंक के लिए अल्पसंख्यकों को खुश करने के लिए कोई फैसला नहीं करेगी।◆◆◆

नवभारत २०/०९/२०२

चीन के लिए जासूसी पत्रकार समेत 3 गिरफ्तार

शर्मा ने जासूसी से डेढ़ साल में कमाए 40 लाख रुपए

हर सूचना के बदले मिलते थे 1000 डॉलर

जासूसी कराने वाली चीनी महिला व नेपाली गिरफ्तार

शेल कंपनियों के जरिये दी थी मोटी रकम

षडयंत्र

- चीनी इंटेलिजेंस के साथ सीधा संपर्क में था पत्रकार
- सेना की तैनाती से जुड़ी जानकारी चीन को दे रहे थे राजीव

◆ एजेंसी | नई दिल्ली.
www.navabharat.org

भारत और चीन के बीच जारी भारी तनाव के बीच दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने चीनी खुफिया एजेंसी के लिए जासूसी करने के आरोप में एक फ्रीलांस पत्रकार राजीव शर्मा की गिरफ्तारी के बाद इस मामले में एक चीनी महिला और नेपाली नागरिक को भी गिरफ्तार किया है. वह चीनी इंटेलिजेंस के अधिकारियों के साथ सीधे संपर्क में था और डोकलाम से गलवान घाटी तक की डिफेंस से संबंधित खुफिया जानकारियां इन अधिकारियों तक सीधा पहुंचा रहा था. रिपोर्ट्स के मुताबिक, शर्मा के पास रक्षा क्षेत्र से जुड़े कुछ गुप्त दस्तावेज बरामद हुए थे. फ्रीलांस पत्रकार राजीव शर्मा ने रक्षा संबंधी अहम गोपनीय सूचनाएं चीनियों को देकर गत डेढ़ साल में 40 लाख रुपए कमाए थे. ◆ शेष पेज 5 पर

2016 में आए थे चीन के संपर्क में

दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल के डीसीपी संजीव कुमार यादव ने बताया कि राजीव शर्मा चीनी अखबार ग्लोबल टाइम्स में रक्षा मामलों पर लेख लिखते थे और वर्ष 2016 में चीनी एजेंट के संपर्क में आए थे. राजीव 2016 से 2018 तक चीनी खुफिया अधिकारियों को संवेदनशील रक्षा और रणनीतिक जानकारी देने में शामिल थे. इसके लिए वह विभिन्न देशों में कई स्थानों पर चीनी खुफिया अधिकारियों से भी मिलते थे. इन मीटिंग्स में भारत-चीन सीमा मुद्दे पर, सीमा पर सेना की तैनाती और सरकार द्वारा तैयार रणनीति आदि की जानकारी साझा की जाती थी.

अमरीका में सिख पुलिस कर्मी के नाम पर होगा डाकघर

अमरीकी प्रतिनिधि सभा ने हयूस्टन में एक डाकघर का नाम भारतीय मूल के अमरीकी पुलिस अधिकारी संदीप सिंह धालीवाल के नाम पर रखने वाले एक विधेयक को पारित कर दिया है। एक साल पहले ड्यूटी के दौरान धालीवाल की गोली मारकर हत्या की गई थी। विधेयक 'डिप्टी संदीप सिंह धालीवाल पोस्ट ऑफिस अधिनियम' को टैक्सास के पूरे प्रतिनिधिमंडल ने सह प्रायोजित किया है। बता दें कि इस विधोयक को 2019 में सांसद लिजी फ्लेचर ने पेश किया था। ◆◆◆

बेरोजगार दलों का बेरोजगार दिवस

... नरेन्द्र सहगल

देशवासियों द्वारा वर्तमान राजनीति से बेदखल, बेअसर और बेरोजगार कर दिए गए कुछ अप्रासांगिक राजनीतिक दलों द्वारा भारत के प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर 'बेरोजगार दिवस' मना कर एक अत्यंत घिनौनी और निम्न स्तरीय हरकत की है। यह 'दिवस' आगे पीछे किसी और दिन भी मनाया जा सकता था। जिस समय प्रधानमंत्री के करोड़ों प्रशंसक भारतवासी, पारिवारिक जन और छोटे बड़े प्राय: सभी देशों के शासक भारत के प्रधानमंत्री को बधाइयां व संदेश भेज रहे थे, उसी समय इस प्रकार की घटिया राजनीति करके इन दलों ने भारत, भारत की जनता और श्री नरेंद्र मोदी की माताश्री का घोर अपमान किया है। शायद ही संसार का कोई ऐसा देश होगा, जिसके विपक्षी दल अपने प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर उसकी तथाकथित और बेबुनियानी कमजोरियों का ढिंढोरा पीटते हों। लोकतांत्रिक अधिकारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का यह अर्थ तो कदापि नहीं होता कि सभी राजनीतिक परंपराओं और शिष्टाचार को तिलांजलि दे दी जाए।

अगर ऐसा ही है तो फिर देश का विभाजन स्वीकार करने, दो तिहाई कश्मीर और लद्दाख के बड़े क्षेत्र को पाकिस्तान और चीन को सौंपने, लॉर्ड मैकाले की शिक्षा को लागू करने वाले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के जन्मदिन को एक 'कलंक दिवस' के रूप में मनाया जाए।

लोकतंत्र की हत्या करके देश को निरकुंश तानाशाही आपातकाल की आग में झोंकने वाली प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के जन्मदिन को 'लोकतंत्र हत्या दिवस' के रूप में मनाया जाए। भगवान श्रीराम को काल्पनिक बताने वाली सोनिया गांधी के जन्मदिन को 'धिक्कार दिवस' के रूप में मनाया जाए। कोट के ऊपर जनेऊ पहन कर अपने गोत्र और जाति पर झूठ बोलने वाले, हिन्दुओं को आतंकवादी कहने वाले मुहम्मद फिरोज खान के पोते राहुल गांधी के जन्म दिवस को 'वर्ण संकर दिवस' के रूप में मनाया जाए।

सुभाष चन्द्र बोस को 'जापान का कुत्ता' कहने वाले, महात्मा गांधी को 'साम्राज्यवादी एजेंट' कहने वाले, कश्मीर को पाकिस्तान का अभिन्न हिस्सा मानने वाले और 1962 के भारत-चीन युद्ध के समय भारत को ही हमलावर बता कर चीन के राष्ट्रपति माओ को 'माओ हमरा चेयरमैन' बताने वाले सभी साम्यवादी नेताओं के जन्म दिवस क्यो ना 'कम्युनिस्ट गद्दार दिवस' के रूप में मनाऐ जाए।

दरअसल मोदी विरोधी गैंग द्वारा सम्पन्न इस 'बेरोजगार दिवस' का संबंध देश के युवकों के साथ कतई भी नहीं था। यह तो अपनी राजनीतिक जमीन और सामाजिक औकात खो चुके उन दलों की वह पीड़ा थी जो पिछले कई चुनावों में देश की जनता ने इन्हें इनके कमर्फल के रूप में दी है। इन लोगों को यही समझ में नहीं आ रहा कि इनका थूका हुआ इनके ही मुंह पर गिर रहा है।

उल्लेखनीय है कि वर्तमान में कुछ हद तक बिगड़ी देश की अर्थव्यवस्था कोरोना महामारी के कारण है। कोरोना की समस्या पूरे विश्व में व्याप्त है। ऐसी परिस्थिति में 'लॉकडाउन' जैसे उपाय करने पड़ते हैं। भारत की स्थिति तो अभी भी कई बड़े देशों से अच्छी है। विपक्षी दलों को राष्ट्र हित के कदम उठाने चाहिए। मोदी विरोध में देश एवं समाज के सम्मान पर चोट करके अपनी पराजित एवं घटिया राजनीति का प्रदर्शन करना देश के हित में नहीं होता। ◆◆◆

हिंदू जागरण मंच ने विभाजन के समय मारे गए असंख्य लोगों का किया तर्पण

उस समय मारे गए लोगों की वजह से हम हैं जिंदा-डा. श्रीकांत

बद्दी/सचिन बैंसल

हिंदू जागरण मंच हिमाचल प्रदेश द्वारा देश के बंटवारे के समय मारे गए असंख्य लोगों के नाम पर सामूहिक श्राद्ध कार्यक्रम का आयोजन बद्दी के निकट शीतलपुर घाट पे किया गया। मंच का ऐसा कहना है कि जो लोग उस समय अचानक मारे गए थे व वीर गति को प्राप्त हुए थे उनका उस समय देश के विभाजन के समय मचे हाहाकार में तर्पण नहीं हो पाया था जो अब हिंदू जागरण मंच ने बीड़ा उठाया है कि उनकी पवित्र आत्माओं की शांति के लिए यह सामूहिक कार्यक्रम हो।

मंच के प्रदेश सचिव ऋषि ठाकुर ने बताया कि गुरुवार को शीतलपुर घाट में पंडित कृष्ण नौटियाल ने वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच श्राद्ध कार्यक्रम का संचालन किया और विधिवत तर्पण करवाया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर हरिओम योगा सोसाईटी के अध्यक्ष डा.श्रीकांत शर्मा ने कहा कि देश को आजादी के समय कुछ ताकतों ने दो हिस्सों में बांट दिया था और उस विभाजन के कारण बहुत से लोग मारे गए थे। आज हमने उनके सम्मान व याद तथा उनको श्रद्धांजलि अर्पण करने के लिए यह तर्पण कार्यक्रम किया। उन्होंने कहा कि उस समय बहुत से लोग ऐसे थे जो कि परिवार सहित खत्म हो गए थे और हिंदू समाज में तभी गति होती है जब हम उनका विधिवत श्राद्ध करें। आज बद्दी की दो दर्जन संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने जल, थल वायु व परम पिता परमेश्वर का ध्यान करते हुए कहा कि उनका हमारे उपर जो कर्ज था उनको उतारने का प्रयास किया। वन विकास निगम के निदेशक बलविंद्र ठाकुर ने कहा कि हम भारतवासी जहां हर साल अपने पूर्वजों का नमन करते हैं वहीं प्रकृति व पशु पक्षियों तक का स्मरण और वंदन तक करते हैं। हिंदू जागरण मंच के प्रदेश सचिव ऋषि ठाकुर ने बताया कि देश के विभाजन के समय (1947) और उससे पूर्व आसुरी शक्तियों (जिहादियों) द्वारा धर्म के नाम पर मारे गए अपने असंख्य पूर्वजों का श्राद्ध कर्म किया गया है। हम अपने उन सभी पूर्वजों के ऋणी हैं जिनके असंख्य बलिदानों के कारण आज भी गर्व से कहते हैं कि हम हिन्दू हैं।

दंगों की साजिश रचने में क... नेता व वकील भी थे शामिल

दंगे का दाग ▶ मोदी सरकार की छवि धूमिल करने के लिए बिगाड़ा माहौ...

गिरफ्तार लोगों ने येचुरी, योगेंद्र यादव, प्रशांत भूषण, सलमान खुर्शीद, वृंदा करात के भी नाम लिए

जागरण संवाददाता, नई दिल्ली

उत्तर-पूर्वी दिल्ली को हिंसा की आग में झोंकने की साजिश की परतें धीरे-धीरे खुल रही हैं। दंगे की साजिश रचने में सलमान खुर्शीद, सीताराम येचुरी, प्रशांत भूषण और योगेंद्र यादव जैसे नामी नेताओं, वकीलों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के नाम सामने आ रहे हैं। मामले में गिरफ्तार आरोपितों ने इनके नाम लिए हैं। सूत्रों के मुताबिक, सभी को नोटिस भेजकर पूछताछ की जाएगी। सुबूत मिलने पर उन्हें आरोपित बनाकर गिरफ्तार किया जाएगा और पूरक आरोप पत्र दायर किया जाएगा।

इस मामले में दायर आरोप पत्र के मुताबिक मोदी सरकार की छवि बिगाड़ने के लिए दंगों को सुनियोजित ढंग से अंजाम दिया गया। इस काम के लिए जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय व जामिया मिल्लिया इस्लामिया के छात्रों को मोहरा बनाया गया और नागरिकता संशोधन कानून के विरोध के नाम पर राजधानी में 22 जगह धरना-प्रदर्शन कराए गए। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल को साजिश के पर्याप्त सुबूत मिले हैं। इनमें कुछ नेता भी शामिल हैं, जिनके नाम सेल ने चरणबद्ध तरीके से आरोप पत्र में शामिल किए हैं। कई सफेदपोशों के नाम और अहम सुबूत पूरक आरोप पत्र में रखने की तैयारी है। सूत्रों के मुताबिक, सीएए को लेकर दिसंबर में धरना-प्रदर्शन की योजना थी। इसी बीच, फरवरी में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के दौरे की बात सामने आई तो वामपंथियों व अन्य बड़े नेताओं ने सरकार की छवि को धूमिल करने के लिए दंगे की साजिश रच डाली। आरोप पत्र में स्पेशल सेल ने कहा है कि समुदायों के बीच तनाव बढ़ाने के लिए इन नेताओं ने धरना-प्रदर्शन में भड़काऊ भाषण दिए थे।

ट्रंप के दौरे को देखते हुए बदली रणनीति, जेएनयू और जामिया के छात्रों को बनाया मोह...

सीताराम येचुरी | योगेंद्र यादव | प्रशांत भूषण | सलमान खुर्शीद | वृंदा करात

साजिश में ये नाम आए हैं सामने

गैर कानूनी गतिविधियां रोकथाम अधिनियम (यूएपीए) के तहत फिलहाल 21 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। उन्होंने अपने बयान में माकपा महासचिव सीताराम येचुरी, स्वराज अभियान के नेता योगेंद्र यादव, वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सलमान खुर्शीद, सीपीआइ एमएल पोलित ब्यूरो सदस्य कविता कृष्णन, वृंदा करात, कांग्रेस नेता उदित राज, अभिनेत्री स्वरा भास्कर, अर्थशास्त्री जयति घोष, दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर व एक्टिविस्ट अपूर्वानंद, कांग्रेस के पूर्व विधायक मतीन अहमद, आप के विधायक अमानतुल्लाह खान, वकील महमूद प्राचा, स्टूडेंट एक्टिविस्ट कंवल प्रीत कौर, वैज्ञानिक गौहर रजा, भीम आर्मी सदस्य हिमांशु व चंदन कुमार आदि के नाम लिए हैं।

राहुल रॉय की जल्द हो सकती है गिरफ्तारी

लघु फिल्म निर्माता राहुल रॉय के खिलाफ स्पेशल सेल को कई अहम सुबूत मिले हैं। उनसे पूछताछ की जा चुकी है। सूत्रों के अनुसार एक या दो बार और पूछताछ के बाद राहुल रॉय को गिरफ्तार किया जा सकता है।

चीन से फंडिंग के भी जुड़ रहे हैं तार

स्पेशल सेल की जांच में फंडिंग के तार चीन से भी जुड़ रहे हैं। दरअसल, स्पेशल सेल को जांच में कई वामपंथी संगठनों व नेताओं के साजिश में शामिल होने की जानकारी मिली है। सेल को शक है कि इनके द्वारा दंगे के लिए चीन से फंडिंग कराई गई है। इस दिशा में भी स्पेशल सेल जांच कर रही है। पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआइ) से करोड़ों रुपये की फंडिंग किए जाने के सुबूत पहले ही मिल चुके हैं।

कांग्रेस ने कहा, दबाव में नहीं झुकेंगे नई दिल्ली, प्रेट्र : दंगों की साजिश में सलमान खुर्शीद और उदित राज का नाम सामने आने के बाद कांग्रेस बचाव में उतर गई है। कांग्रेस के प्रवक्ता रणदीप सुरजेवाला ने कहा कि खुर्शीद, उदित राज व अन्य का नाम घसीटना मोदी सरकार की कायरता की निशानी है। मोदी सरकार विरोधियों को कुचलने की कोशिश करती है, लेकिन हम सत्ता के आगे झुकेंगे नहीं।

22 फरवरी को सड़क जाम करने का मि... संदेश

महिलाओं पर यूएन आयोग का सदस्य बना भारत

भारत ने संयुक्त राष्ट्र में चीन को पटखनी देते हुए आर्थिक व सामाजिक परिषद ईसीओएसओसी की संस्था में जगह बना ली है। भारत अब अगले चार साल के लिए महिलाओं की स्थिति को लेकर बने आयोग 'सीएसडब्ल्यू' का सदस्य बन गया है। इस संस्था का सदस्य बनने के लिए चीन के अलावा भारत व अफगानिस्तान इस दौड़ में थे। चीन को इस मुकाबले में कुल मतों के आधे भी नहीं मिल सके। लैंगिक समानता के क्षेत्र में काम करने वाली सीएसडब्ल्यू कमीशन ऑन स्टेटस ऑफ वुमन संस्था संयुक्त राष्ट्र की ईसीओएसओसी का हिस्सा है। इसमें भारत का कार्यकाल वर्ष 2021 से शुरू होकर 2025 तक चलेगा। तीन देश इसके सदस्य बनने की दौड़ में थे जिनमें भारत और अफगानिस्तान को 54 देशों द्वारा किए गए मतदान में जीत मिली। भारत के पक्ष में कुल 38 मत गिरे जबकि संयुक्त राष्ट्र में अफगानिस्तान के राजदूत एडेला रेज के नेतृत्व में 39 वोट पड़े। चीन 28 मत पाक आवश्यक बहुमत पाने में नाकाम रहा। पहले ही कई मोर्चे पर शिकस्त खा रहे चीन को इस मुकाबले में करारी हार का सामना करना पड़ा। ईसीओएसओसी में एक वक्त में 45 सदस्य होते हैं। ◆◆◆

महिलाओं का स्थान पुरूषों से हजार गुना अधिक

आज विश्व महिला समानता की बात करता है। परन्तु भारत का इतिहास कहता है कि महिलाओं का स्थान पुरुषों से हजारों गुना अधिक है। वैदिक काल में अनेकों ऋषिकाओं को ऋषियों से आगे बढकर मंत्र विचार हो या शास्त्रार्थ हो कार्य करने का मौका रहता था। गार्गी मैत्रेयी जैसे अनेकों उदाहरण हमारे सामने है। रामायण काल में कैकई सीता अनुसुया वसन्तसेना और महाभारत काल कुन्ति गान्धारी द्रोपदी सुभद्रा उत्तरा जैसी अनेकों महिलाओं को उदाहरण हमारे सामने है कि महिलाएं पुरुषों से आगे ही रही है। महर्षि मनु ने अपने ग्रन्थ के 3.56वें श्लोक में कहा है कि जहां महिलाओं की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है।पूजा से मतलब है मान सम्मान देना। आखिर ऐसा क्या हुआ कि विश्व स्तर पर आज महिला समानता की बात करनी पड रही है। 26 अगस्त को विश्व महिला समानता दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। इसके पीछे एक ही कारण है हमारी मानसिता । हमारी मानसिकता ही है जिसने श्री राम के आदर्शों को नहीं रावण के आदर्शों को अपनाया और जिस महिला का स्थान सबसे बडा था उसे अपने भोग विलासता के लिए तथा अपने झूठे अहंकार की पूर्ति के लिए दबा कर रख दिया। हमारी मानसिकता ही है जिसके कारण हमने योगेश्वर श्री कृष्ण के आदर्शो को न अपनाते हुए दुस्शासन और दुर्योधान बनकर द्रोपदी जैसी महान महिला शद्रि का अपमान करते पीछे नहीं हटते। जिस दिन से हमने महर्षि मनु महर्षि वेदव्यास महर्षि बाल्मीकि सत्यवादी हरिश्चन्द्र श्री राम श्री कृष्ण श्री बलराम श्री युधिष्ठिर सम्राट् चन्द्रगुप्त स्वामी दयानन्द स्वमी श्रीनन्द जैसे महापुरुषों के आदर्शों को त्यागा उसी दिन से हमारे समाज में महिलाओं का स्थान बढना तो दूर बराबर भी नहीं रहा और महाशक्ति विदूषी जगजननी वैभवी निर्मातृ गुरू आचार्या आदि सम्बोधानों के स्थान पर पैरों की जूती ताडना के अधिकारी सन्तानों की खेत अबला लाचार आदि सम्बोधान दिए जाने लगे। तब एक सशक्त महिला पहली आई.पी.एस. किरण वेदी जिसने पहले स्वयं को सि) किया फिर उसके बाद कहा– कि महिलाओं को हमें सशक्त बनाने की जरुरत है उन्हे ऐसे पद पर पहुचने की जरुरत है जहां उन्हें त्याग करने की बजाय चुनाव करना पडे।

मौत में अपना अस्तित्व तलाशता मीडिया

... डॉ. नीलम महेन्द्र

आजकल जब टीवी ऑन करते ही देश का लगभग हर चैनल 'सुशांत केस में नया खुलासा' या फिर 'सबसे बडी कवरेज' नाम के कार्यक्रम दिन भर चलाता है तो किसी शायर के ये शब्द याद आ जाते हैं, 'लहू को ही खाकर जिए जा रहे हैं, है खून या कि पानी, पिए जा रहे हैं।' ऐसा लगता है कि एक फिल्मी कलाकार मरते मरते इन चैनलों को जैसे जीवन दान दे गया। क्योंकि कोई इस कवरेज से देश का नंबर एक चौनल बन जाता है तो कोई नम्बर एक बनने की दौड़ में थोड़ा और आगे बढ़ जाता है। लेकिन क्या खुद को चौथा स्तंभ कहने वाले मीडिया की जिम्मेदारी टी आर पी पर आकर खत्म हो जाती है?देश दुनिया में और भी बहुत कुछ हो रहा है क्या उसे देश के सामने लाना उनकी जिम्मेदारी नहीं है?खास तौर पर तब जब वर्तमान समय पूरी दुनिया के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण है।

एक ओर लगभग आठ महीनों से कोरोना नामक महामारी ने सम्पूर्ण विश्व में अपने पैर पसार रखे हैं तो दूसरी ओर वैज्ञानिकों के तमाम प्रयासों के बावजूद अभी तक इसके इलाज की खोज अभी जारी है। परिणामस्वरूप इसका प्रभाव मानव जीवन के विभिन्न आयामों से लेकर तथाकथित विकसित कहे जाने वाले देशों पर भी पढ़ा है। देशों की अर्थव्यवस्था के साथ साथ परिवारों की अर्थव्यवस्था भी चरमरा रही है। कितने ही लोगों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ा है तो कितने ही व्यापारियों के काम धंधे चौपट हैं। ऐसे हालातों में कितने लोग अवसाद का शिकार हुए और कितनों ने परिस्थितियों के आगे घुटने टेक कर अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर ली। इन कठिन परिस्थितियों में भारत केवल कोरोना से ही नहीं लड़ रहा बल्कि एक सुनियोजित षड़यंत्र के तहत उसके कुछ पड़ोसी देश उसे सीमा विवाद में उलझा रहे हैं। एलओसी पर पाकिस्तान की ओर से गोली बारी और उसके द्वारा प्रायोजित आतंकवादी घुसपैठ के अलावा अब एल एसी पर चीन से भारतीय सेना का टकराव होने से चीन के साथ भी तनाव की स्थिति निर्मित हो गई है। इतना ही नहीं चीन की शह पर नेपाल भी भारत के साथ सीमा विवाद में उलझ रहा है।इस बीच यह खबर भी आई कि चालू वित्त वर्ष की अप्रैल जून तिमाही में भारत की जीडीपी ग्रोथ रेट -23.9 प्रतिशत दर्ज की गई है। लेकिन इन विषमताओं के बावजूद देश में इस आपदा को अवसर में बदलने की बहुत से कदम भी उठाए गए जैसे आत्मनिर्भर भारत की नींव और वोकल फॉर लोकल का संकल्प। इतना ही नहीं संकल्पों से आगे बढ़कर देश के इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने वाले कुछ महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट पूर्ण हुए और देश को समर्पित भी किए गए। जैसे, भारत व बांग्लादेश के बीच व्यापारिक संबंधों को मजबूत करने के लिए कोलकाता से बांग्लादेश के लिए जलमार्ग शुरू किया गया। 10171 फीट की ऊंचाई पर दुनिया की सबसे लंबी रोड टनल 'अटल रोहतांग टनल' बनकर तैयार हो गई। इससे ना सिर्फ अब लद्दाख सालभर देश से जुड़ा रहेगा बल्कि मनाली से लेह की दूरी करीब 46 किलोमीटर कम हो गई है। चेन्नई और पोर्ट ब्लेयर को जोड़ने वाली सबमरीन ऑप्टिकल फाइबर केबल की सुविधा शुरू हो गई है, जिससे अंडमान निकोबार द्वीप समूह में मोबाइल और इंटरनेट कनेक्टिविटी की दिक्कत समाप्त हो जाएगी और यहाँ से बाहरी दुनिया से डिजिटल सम्पर्क करने में आसानी होगी। इसी प्रकार एशिया के सबसे बड़े सोलर पॉवर प्रोजेक्ट जो कि मध्य प्रदेश के रीवा में स्थित है उसका उद्घाटन भी हाल ही में किया गया। निसंदेह ये ना सिर्फ गर्व करने योग्य देश की उपलब्धियां हैं बल्कि जनमानस में सकारात्मकता फैलाने वाली खबरें हैं। लेकिन शायद ही खुद को चौथा स्तंभ मानने वाली देश की मीडिया ने इन खबरों का प्रसारण किया हो अथवा किसी भी प्रकार से देश की इन उपलब्धियों से देश की जनता को रूबरू कराने का प्रयत्न किया हो। दस हजार फीट की ऊंचाई पर दुनिया की सबसे लंबी टनल जो कि सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, वो इन चैनलों के लिए चर्चा का विषय नहीं है। एशिया का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा का सयंत्र इनके आकर्षक का केंद्र नहीं है। आजादी के 74 सालों बाद तक डिजिटल रूप से अबतक कटा हुआ हमारे देश का एक अंग अंडमान निकोबार अब देश ही नहीं बल्कि दुनिया के भी संपर्क में है, इनके लिए यह कोई विशेष बात नहीं है। क्योंकि इन खबरों से इनकी टी आर पी नहीं बढ़ती। लेकिन एक फिल्मी कलाकार की मृत्यु इनके लिए बहुत बड़ा मुद्दा बन जाता है।

इतना बड़ा कि 'सुबह की खबरों' से लेकर रात की 'प्राइम टाइम' तक इसी मुद्दे को लगभग हर चैनल पर जगह मिलती है। वो अब चल दिए हैं वो अब आ रहे हैं, यही दिखा कर सब पैसा कमा रहे हैं। यह टीआरपी का खेल भी अजब है कि रिया अब घर से निकल रही हैं से लेकर रिया अब घर वापस जा रही हैं की रिपोर्टिंग बकायदा 'हम रिया की कार के पीछे हैं और आपको पल पल की खबर दे रहे हैं' तक चलती है। व्यावसायिकता की इस दौड़ में आज किसी की मौत को ही पैसा कमाने का जरिया बनाने से भी गुरेज नहीं किया जाता। और तो और इनकी 'खोजी पत्रकारिता' जिस प्रकार से रोज 'नए खुलासे' करती है उसके आगे सभी जांच एजेंसियां भी फेल हैं। शायद इसलिए प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया ने इस मामले में विभिन्न मीडिया संस्थानों की कवरेज के मद्देनजर मीडिया को जांच के दायरे में चल रहे मामले को कवर करते समय पत्रकारीय आचरण के मानकों का ध्यान रखने की हिदायत दी है। अब यह तो मीडिया के समझने का विषय है कि वो मात्र एक मनोरंजन करने वाले साधन के रूप में अपनी पहचान बनाना चाहता है या फिर एक ज्ञानवर्धक शिक्षाप्रद एवं प्रमाणिक स्रोत के रूप में। ◆◆◆

प्यारा भारत देश हमारा

... चेतन कौशल नूरपुरी

विश्व इतिहास में यह कितनी बड़ी विडम्बना रही है कि रावण ने श्रीराम जी का और कंस ने श्रीकृष्ण जी का जीवनभर विरोध किया और उन्हीं के हाथों मृत्यु को भी प्राप्त हुए। भारत के प्रधानमंत्री, नरेंद्र मोदी, आतंकवाद, भष्टाचार को मिटाना और उससे संबंधित व्यापक अव्यवस्था का सुधार करना चाहते हैं तो हजारों आतंकवादी, भ्रष्टाचारी और असामाजिक तत्व संगठित होकर उनके मार्ग में एक बड़ी बाधा भी बन रहे हैं। भले ही पूर्वकाल में सुख-सुविधाएं कम थीं फिर भी लोग एक स्थान पर मिल-बैठकर एक दूसरे का दु:ख-सुख बांट लिया करते थे। पर वह बात आज नहीं है, सुख-सुविधा संपन्न लोग स्वार्थ और अंहकार वश दिन-प्रतिदिन एक दूसरे से निरंतर दूर होते जा रहे हैं।

वास्तविक लोकतंत्र में जनहित की किसी सरकारी या गैर सरकारी योजना की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उससे अधिक से अधिक लोगों को लाभ मिले। किसी भी योजना में धान, समय, स्थान और उसके संसाधनों का उचित प्रयोग हो, उनका सदुपयोग हो और स्थानीय लोग उसमें स्वेच्छा से बढ़चढ़ कर भाग लें। देश की जनता को जन प्रतिनिधियों, विधायकों और सांसदों द्वारा किये जाने वाले खोखले निरर्थक वादों, बड़े-बडे नारों, लम्बे-लम्बे लारों और ढेरों सारे उद्घाटनों की नहीं उनके द्वारा मन, कर्म और वचन द्वारा जनहित में दिखने वाले और किए जाने वाले सार्थक कार्यों की आवश्यकता होती है।

किसी राष्ट्र, समाज, परिवार और व्यक्ति का महत्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसके कितने मित्र हैं, उसकी भावना और व्यवहार से कब, कितनों को सुख पहुंचता है। देश के लाखों वीर-वीरांगनाओं के बलिदानों से ही हमें अनमोल स्वाधीनता प्राप्त हुई है। अब हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम सब इसकी रक्षा-सुरक्षा सुनिश्चित बनाए रखें ताकि कोई उस पर कुदृष्टि न डाल सके। प्राचीन भारत की तरह स्वाधीन भारत में भी ऐसी व्यवस्था अवश्य होनी चाहिए। इसमें हर प्रतिभावान को अपने जीवन में आगे बढ़ने का सुअवसर मिल सके ताकि उसके द्वारा प्रदत सेवाओं से समाज और राष्ट्र दोनों का समान रूप से विकास हो सके।

विश्व के लोग जापान में जापानी, फ्रांस में फ्रांसिसी, नेपाल में नेपाली, भूटान में भूटानी हो सकते हैं, तो इस तरह भारत में रहने

वाले भी भारतीय ही हुए। इसलिए गर्व से कहो! हम सब भारतीय हैं।

विश्व में कोई ऐसा रोग नहीं, जिसका इलाज न हो सके। ऐसी कोई समस्या नहीं है जिसका निदान न निकल पाए। दोनों का कोई न कोई विशेष कारण अवश्य रहता है। अगर समय रहते कारण का निराकरण कर लिया जाए तो न कभी कोई रोग होगा और न ही कोई समस्या रहेगी। अगर देश ही नहीं रहेगा तो हम कहां होंगे! समय आ गया है-देश की अखण्डता बनाए रखने हेतु हमें जाति, धर्म और ऊंच-नीच की दीवारों को सदा के लिए अपने बीच से हटाना होगा क्योंकि मानव जाति, मानवता धर्म और मृत्यु ही सत्य है, बाकी सब मिथ्या है।

अखिल भारतीय खेल प्रतियोगिता, ज्ञान कला प्रदर्शनी, विचार अभिव्यक्ति, व्यपार मेला और आध्यात्मिक हित जैसे सभी आयोजन इस बात पर निर्भर करते हैं कि हम अपने राष्ट्र से कितना प्रेम करते हैं?हम गद्दारों का मुंहतोड़ उत्तर देने में कितने सक्षम हैं?

भारतीय इतिहास को आज तलक भारत में जनित, संस्कारित एक भारतीय ने जितना अच्छा जाना है, विपरीत सभ्यता, संस्कृति में जनित, संस्कारित किसी अन्य ने नहीं। वह तो भारतीय इतिहास को कभी जानने की चेष्टा तक नहीं करते हैं, रोहिंग्या, बांगला देशी शरणार्थी जैसे असंख्य घुसपैठी समुदायों का तो मात्र एक यही उदेश्य रहता है कि किस तरह अन्य राष्ट्र (भारत) की संगठित शक्ति एवं सुख-समृद्धि को नष्ट करके उसे क्षीणहीन बनाकर उस पर अपना आधिपत्य स्थापित किया जाए?

वर्तमान भारत बहुत सजग है। वह भली प्रकार जानता है-वही राष्ट्र सदैव स्वतंत्र रह सकता है, जो स्वतंत्रता की भली प्रकार रक्षा करना जानता है। विश्व में युद्धकों का निर्माण सत्य, धर्म, नीति और न्याय की रक्षा करने के लिए हुआ है, प्रकृति के जल चर, थल चर, नभ चर, स्थावर-जंगम, और मानव जाति के विरुद्ध असत्य, अधर्म, अनीति और अन्याय करने के लिए नहीं। देश की रक्षा के लिए युद्ध जीतना भी एक कला है। उसके लिए अच्छी युद्ध सामग्री तभी कारगर सिद्ध हो सकती है, जब वे समय पूर्व पूर्णत: सुपरीक्षित हो और उससे संबंधित समस्त सैनिकों को उनका अच्छा शिक्षण-प्रशिक्षण भी प्राप्त हो। आतंकवाद के इस भयावह दौर में उन्हें उनकी न जाने कब और कहां आवश्यकता पड़ जाए।

◆◆◆

लव-जिहाद एकजन-सांख्यिक आक्रमण है

हिन्दू विश्व में 147 घटनाओं की सूची व तथ्य आँखें खोलने वाले

विश्व हिन्दू परिषद (विहिप) के केन्द्रीय कार्याध्यक्ष एडवोकेट श्री आलोक कुमार ने आजकहा है कि लव जिहाद जनसंख्या पर सुनियोजित आक्रमण है। पुलिस, सरकार और समाज इन तीनों को मिलकर सतर्कता पूर्वक समयोचित कार्यवाही हेतु आगे आना होगा। राष्ट्रीय जागरण की पाक्षिक पत्रिका 'हिन्दू विश्व' के लव जिहाद विशेषांक का विमोचन करते हुए कहा कि लव जिहाद एक ऐसा षड़यन्त्र है जो कुछ लोगों द्वारा जानबूझकर पैसे, साधन व धार्मिक अंध विश्वासों के आधार पर चलाया जा रहा है। इसे रोका जाना नितांत आवश्यक है। पत्रिका में लव जिहाद की 147 घटनाओं की सूची सहित दिए गए तथ्य समाज की आँखें खोलने वाले होंगे। विहिप कार्याध्यक्ष

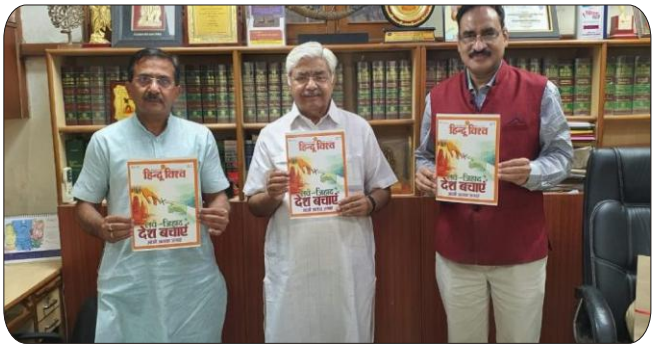

ने कहा कि केरल के मुख्यमंत्री ने 2012 में कहा था कि गत 3 वर्षों में 2667 हिन्दू लड़कियोंने इस्लाम स्वीकार किया तथा इसी बीच 79 लड़कियां वापस हिन्दू बनीं तथा 2 ईसाई। येजो असंतुलन है, वह चिंता जनक है। सामान्य तौर पर लव जिहादी मुस्लिम युवक यह विश्वास करता है कि हिन्दू लड़कियों (खासकर निम्न आय वर्ग की) को, चाहे धोखे से, तिलक लगा कर, हाथ में कलावे के साथ हिन्दू होने का भ्रम पैदाकर अपने प्रेम जाल में फंसाने, निकाह और मजहब का विस्तार करने तथा उनके साथ घूमने में उनके समुदाय का समर्थन हासिल है। जब विवाहोपरांत लड़की को पता चलता है कि मैंने जिस लड़के से विवाह किया था वह विधर्मी है, खान-पान, वेश-भूषा, आचार-विचार तथा व्यवहार में उलटा है, तब उनकी स्थिति क्या होती है यह बहुर सारे उदाहरणों से स्पष्ट है। ◆◆◆

हिम सिने सोसायटी ने बैनमोर वार्ड में किया पौधरोपण

हिम सिने सोसायटी-एक सोच, हिमाचल प्रदेश द्वारा आज रविवार शिमला नगर के बैनमोर वार्ड में पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सोसायटी के सदस्यों और स्थानीय लोगों द्वारा देवदार, अखरोट और खनुर के 50 पौधे रोपे गए। कार्यक्रम का शुभारंभ बालिका अवनी द्वारा पौधारोपण से किया गया।

इस अवसर पर बैनमोर वार्ड पार्षद किम्मी सूद भी उपस्थित रहीं। उन्होंने भी कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए सहयोग दिया। कार्यक्रम में शामिल सोसायटी के सदस्यों ने लोगों को पौधों के संरक्षण का भी संकल्प दिलाया। इस अवसर पर सोसायटी के मार्गदर्शक प्रांत प्रचार प्रमुख महीधर प्रसाद, हस्तपा के अध्यक्ष मोहित सूद, मातृवन्दना संस्थान से नंदलाल, विश्व संवाद केंद्र से कृष्ण मुरारी, सोसायटी के सदस्य अधिवक्ता वीर बहादुर, शुभम महाजन, सोहटा, वरूण, नंदलाल, तिब्बती कॉलोनी के निवासियों सहित 25 से अधिक लोगों ने भाग लिया।

उल्लेखनीय है कि हिम सिने सोसायटी कला, सिनेमा तथा सामाजिक सरोकार के लिए प्रदेश में कार्य कर रही है। पौधारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए हिम सिने सोसायटी की उपाध्यक्ष भारती कुठियाला, सचिव संजय सूद ने उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर वन विभाग से जाखू वनरक्षक मोनिका और वरिष्ठ वनरक्षक दीपक शर्मा भी उपस्थित रहे और पोधों को सही प्रकार से रोपने में भी लोगों की मदद की।◆◆◆

कोरोना को निष्क्रिय कर सकता है ग्रेफीन

वैज्ञानिकों ने चीन की लैब में किए गए प्रारंभिक परीक्षण में ग्रेफीन को दो प्रकार के कोरोना वायरस को पूरी तरह निष्क्रिय करने में कारगर पाया है। ग्रेफीन को महज दस मिनट तक सूर्य की रोशनी में रखे जाने पर इसकी यह खूबी देखी गई है। उन्होंने ग्रेफीन मास्क भी विकसित किया है, जो बैक्टीरिया को रोकने में 80 फीसद सक्षम पाया गया है। उनका दावा है कि दस मिनट तक सूर्य की रोशनी में रखे जाने पर इस मास्क की क्षमता 100 फीसद तक हो सकती है। सिटी यनिवर्सिटी ऑफ हांगकांग के शोधकर्ता कोविड-19 का कारण बनने वाले सार्स-कोवी-2 वायरस पर भी यही परीक्षण करने की योजना बना रहे हैं। एसीएस नैनो पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, ग्रेफीन मास्क का निर्माण बेहद कम लागत पर आसानी से किया जा सकता है। इससे कच्चे माल की समस्या के साथ ही नॉन-बायोडिग्रेडेबल मास्कों के निस्तारण की समस्या का भी समाधान किया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने लेजर के उपयोग से ग्रेफीन मास्क बनाने की तकनीक को पर्यावरण के अनुकूल करार दिया है। उनका कहना है कि कार्बन से बनी कोई भी चीज मसलन सेल्युलोज या कागज को भी इस तकनीक की मदद से ग्रेफीन में बदला जा सकता है। इस तरीके से किसी तरह का प्रदूषण भी नहीं होगा। सिटी यूनिवर्सिटी के एसी. प्रो. ये रूक्वान ने कहा, 'लेजर तकनीक से तैयार ग्रेफीन मास्क कई बार उपयोग में लाया जा सकता है। अगर ग्रेफीन उत्पादन के लिए बायोमैटेरियल उपयोग किया जाए तो मास्क के लिए कच्चे माल की उपलब्धता की समस्या का भी समाधान भी हो सकता है।◆◆◆

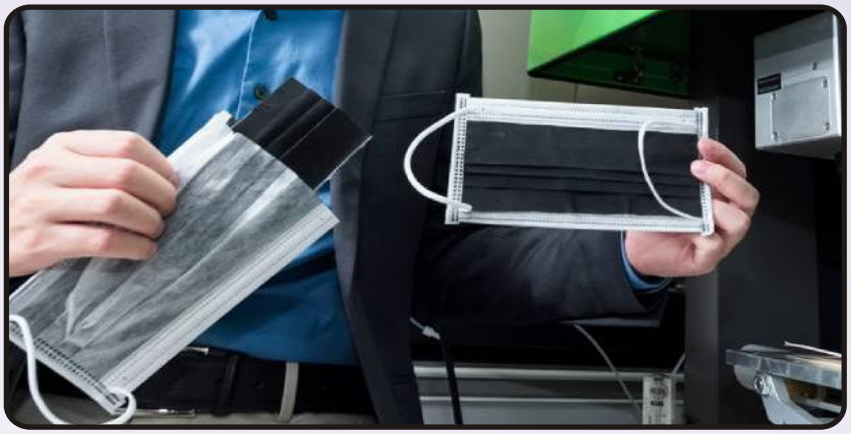

प्रधानमंत्री का पक्षी प्रेम

अपने पक्षी और प्रकृति प्रेम का दर्शाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को इंस्टाग्राम पर वीडियो शेयर किया है। इसमें वह पीएम आवास में मोर को दाना खिलाते दिखाई दे रहे हैं। इस वीडियो ग्रैब की पिक्चर में प्रधानमंत्री सोफे पर बैठकर पत्रावली पढ़ रहे हैं और पास में राष्ट्रीय पक्षी मोर प्लेट से दाने चुग रहा है। मोदी ने इस वीडियो के साथ एक कविता भी शेयर की है।

भोर भयो, बिन शोर, मन मोर,
भयो विभोर, रग-रग है रंगा
नीला भूरा श्याम सुहाना,
मनमोहक, मोर निराला।
रंग है, पर राग नहीं, विराग का विश्वास यही,
न चाह, न वाह, न आह,
गूंजे घर-घर आज भी गान,
जिये तो मुरली के साथ जाये
तो मुरलीधर के ताज।
जीवात्मा ही शिवात्मा,
अंतर्मन की अनंत धारा मन
मंदिर में उजियारा सारा,
बिन वाद-विवाद,
संवाद बिन सुर-स्वर,
संदेश मोर चहकता
मौन महकता।

द्दी में विभाजन के समय मारे गए असंख्य लोगों का किया तर्पण

बद्दी, 17 सितम्बर (स.ह.): रविवार को हिंदू जागरण मंच द्वारा देश के बंटवारे के समय मारे गए असंख्य लोगों के नाम पर सामूहिक श्राद्ध कार्यक्रम का आयोजन बद्दी के निकट शीतलपुर घाट पर किया गया। मंच का ऐसा कहना है कि जो लोग उस समय अचानक मारे गए थे वे वीर गति को प्राप्त हुए थे उनका उस समय देश के विभाजन के समय मचे हाहाकार में तर्पण नहीं हो पाया था। मंच के प्रदेश सचिव ऋषि ठाकुर ने बताया कि गुरुवार को शीतलपुर घाट में पंडित कृष्ण नौटियाल ने वैदिक मंत्रोच्चारण के बीच श्राद्ध कार्यक्रम का संचालन किया और विधिवत तर्पण करवाया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता हरिओम योगा सोसायटी के अध्यक्ष डा. श्रीकांत शर्मा रहे। उन्होंने कहा कि उस समय बहुत से लोग ऐसे थे जोकि परिवार सहित खत्म हो गए थे और हिंदू समाज में तभी गति होती है जब हम उनका विधिवत श्राद्ध करें।

माँ की शहादत को कोटि कोटि नमन 🙏🙏

झाड़ू लगाने वाली महिला के रिटायर होने वाले कार्यक्रम में 3 गाड़िया पहुँची.

पहली गाड़ी जिसमे सिवान जिला के कलेक्टर महेंद्र कुमार जी उतरे. दूसरी गाड़ी में रेल्वे के इंजीनियर उतरे और तीसरी गाड़ी में एक एम डी डॉक्टर उतरे.उन्हें देख कर सारे चुप हो गए वो तीनो उसी महिला के बेटे थे.महिला ने अपना काम इसलिए नहीं छोड़ा क्योंकि उसी काम की वजह से वे तीनों उस पद पर थे. फिल्मों की नकली कहानियों को शेयर करने से अच्छा ऐसे लोगों की कहानी शेयर करें ताकी लोगों को प्रेरणा मिल सके.

उइगर मुस्लिमों की पहचान खत्म करना चीन का मकसद

ओस्लो (नार्वे)। अमेरिका स्थित रेडियो फ्री एशिया (आरएफए) के लिए काम करने वाली पत्रकार गुलछेहरा होजा ने चीन को लेकर बड़ा खुलासा किया है।

होजा ने कहा, चीन सरकार का एकमात्र मकसद उइगर मुस्लिमों की सांस्कृतिक, भाषाई और अन्य पहचान को पूरी तरह खत्म करना है। उन्होंने कहा, चीन सरकार ने मेरे अमेरिका में काम करने पर परिजनों और दोस्तों को काफी परेशान भी किया। ओस्लो फ्रीडम फोरम नामक मानवाधिकार फाउंडेशन में बोलते हुए होजा ने कहा कि जबसे उन्होंने आरएफए के लिए काम करना शुरू किया है तब से वह अपने घर नहीं लौट सकी हैं। होजा चीन के शिनजियांग में सरकारी टीवी में काम करती थी लेकिन उइगर मुस्लिमों के खिलाफ चीन सरकार द्वारा चलाए जा रहे अभियान की वजह से उन्होंने नौकरी छोड़ दी और अमेरिका चली आईं। एजेंसी

You Retweeted

Dinesh D Kulkarni @dinesh_kulk... · 2h

केवल सरकारी नही बल्कि देश मे कही भी होने वाली खरीद MSP के नीचे नही होगी ऐसी कानूनी व्यवस्था हो।तब सरकार की मनीषा पूर्ण होगी।
@raghvendrapatel @nstomar @sambitswaraj @RSSorg @BKSmahakaushel @pachasar @PTI_News @PMOIndia @aajtak

Narendra Modi @narendr... · 19h

किसानों को भ्रमित करने में बहुत सारी शक्तियां लगी हुई हैं। मैं अपने किसान भाइयों और बहनों को आश्वस्त करता हूं कि MSP और सरकारी खरीद की व्यवस्था बनी रहेगी। ये विधेयक वास्तव में किसानों को कई और विकल्प प्रदान कर उन्हें ...

MAKE IN INDIA

हरदोई के संडीला में बनेगी ब्रिटेन की वेबली स्कॉट रिवॉल्वर

कंपनी ने लखनऊ के सियाल मैन्युफैक्चर्स प्राइवेट लिमिटेड से किया है समझौता
नवंबर से ये कंपनी रिवॉल्वर का उत्पादन शुरू करेगी
शुरुआत में .32 रिवॉल्वर का निर्माण होगा
जिसकी कीमत 1.6 लाख रुपये होगी

विदेशी कंपनियों के भारत में निवेश से अर्थव्यवस्था होगी मजबूत, रोजगार के बढ़ेंगे अवसर

हालात | पीपुल्स लिबरेशन आर्मी में भारतीय जवानों को लेकर काफी घबराहट, सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल

लद्दाख में हुई पोस्टिंग, तो रोने लगे चीनी सैनिक

एजेंसिया – ताइवान

भारत-चीन के बीच लद्दाख में कई महीनों से चल रहे सीमा विवाद के चलते हालात तनावपूर्ण हैं। दोनों देशों की सेनाओं ने एलएसी पर बड़ी संख्या में सैनिकों की तैनाती कर रखी है। चीनी सैनिकों के बीच भारतीय जवानों को लेकर काफी घबराहट है। पड़ोसी देश के सैनिकों में इस कदर डर है कि जैसे ही चीनी सैनिकों को पता चला कि उनकी तैनाती लद्दाख में भारत-चीन की सीमा पर होने वाली है, उनके आंखों में आंसू आ गए। सोशल मीडिया पर पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के रोने का वीडियो वायरल हो रहा है। इस वीडियो में दावा किया जा रहा है कि चीनी सैनिकों के रोने की वजह उनकी लद्दाख में होने वाली तैनाती है। पाकिस्तान के कामेडियन जैद हामिद ने फेसबुक पर एक वीडियो पोस्ट किया। इस वीडियो में, कुछ चीनी सैनिक एक बस में बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं। वे सभी रो रहे हैं, क्योंकि उनकी पोस्टिंग लद्दाख की सीमा पर होने जा रही है। रिपोर्ट के अनुसार, बस में सवार चीनी सैनिक पीएलए के गाने 'ग्रीन फ्लावर्स इन दि आर्मी' गाने को भी बहुत मुश्किल से गा पा रहे हैं। यह वीडियो सबसे पहले वीचैट के फुयांग सिटी वीकली के पेज पर अपलोड किया गया था, लेकिन बाद में उसे वहां से हटा दिया गया। ओरिजनल फुटेज में यिंगझोउ जिला के फुयांग सिटी के दस नए सैनिक दिखाई दे रहे हैं। वीडियो के जरिए से दावा किया गया है कि सभी ताजा भर्तियां कथित तौर पर कालेज के छात्रों की थीं और उनमें से पांच ने तिब्बत में सेवा करने के लिए स्वेच्छा से चुना था। रिपोर्ट के मुताबिक, यह वीडियो कथित तौर पर फुयांग रेलवे स्टेशन पर शूट किया गया था, जब सैनिक हुबेई प्रांत के एक सैन्य शिविर में जाने की तैयारी कर रहे थे। ट्विटर पर भी एक चीनी यूजर ने वीडियो को फिर से पोस्ट किया है। महीनों से चले आ रहे भारत-चीन में तनाव के बीच सोमवार को दोनों पक्षों में कोर कमांडर स्तर की वार्ता हुई थी। तकरीबन 13 घंटे तक चली इस वार्ता के बाद संयुक्त बयान जारी किया गया था। दोनों देशों ने एलएसी के अग्रिम इलाकों में और सैनिकों की तैनाती नहीं करने पर सहमति जताई है।

LAND FOR SALE
20 Biswa Land Near Solan
Solan at Sultanpur Road Side Fully Developed Plot for Immediately Sale
Near Manav Bharti University
Please Contact:
Batta Properties
Himachal Numbers
94180-23313, 86796-66666
Chandigarh Numbers
98140-05667, 98150-05667

1:27 PM

facebook

AajTak @aajtak

दिल्ली के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया को मैक्स अस्पताल शिफ्ट किया जा रहा है. मनीष सिसोदिया को कोरोना के बाद डेंगू हुआ है. | @PankajJainClick

DEEPAK KANDWAL @deepakkandwaluk

वर्ल्डक्लास हॉस्पिटल और मौहल्ला क्लीनिक हैं दिल्ली सरकार के कहने वाले, खुद को डेंगू होने पर मैक्स हॉस्पिटल की शरण मे चले गए। मैं बीमारी पर राजनीति नही करता लेकिन जनता को पता लगना चाहिए कि इनकी कथनी और करनी में कितना फर्क है।

610 · 16 Comments • 291 Shares

Like · Comment · Share

ऑपइंडिया 12h

महाराष्ट्र के मुंबई से रिपोर्टिंग करते हुए रिपब्लिक टीवी के पत्रकार

जिस देश में गाड़ी पर हिंदी में नम्बर लिखने से चालान हो, जहाँ 90% लोग अंग्रेज़ी में हस्ताक्षर करते हो, जहाँ हिंदी के लिए दो दबाना पड़ता है, एवं जिस देश की अदालत में न्याय के लिए बहस हिंदी में नहीं सुनी जाती उस देश के देशवासियों को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

मै हिन्दू जगाने आया हू / Be Hindu Buy From Hindu 17 September at 19:24 · Facebook for Android

एक पंचरपुत्र मुदस्सर अहमद एक शादीशुदा हिंदू बहिन को परेशान करता था और फोन पर आशिकी दिखा रहा था। हिंदू बहिन ने हिंदू आश्रम मुम्बई में संपर्क किया व उससे मिलने के लिए कहा और पंचरपुत्र अकेला आया .. फिर क्या था आगे का दृश्य आपकी आंखों के सामने है कोई भी हिन्दू बहिन घबराये न सीधे हम से संपर्क करे हम पूरी दुनिया में आपकी सहायता करेंगे पंचरपुत्रो को उनकी औकात याद दिलाएंगे
संपर्क करे 8319981694
9930256396

ण्ड • नाचना · dainikbhaskar.com

बॉर्डर पर घुसपैठ और मादक पदार्थों की तस्करी को लेकर गृह मंत्रालय अलर्ट

सीमाजन कल्याण समिति की रिपोर्ट के बाद दिए कार्रवाई के निर्देश

भास्कर संवाददाता | जैसलमेर

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने जैसलमेर सहित पश्चिमी राजस्थान के बॉर्डर पर घुसपैठ, जासूसी और मादक पदार्थों की तस्करी को लेकर चिंता जताते हुए जैसलमेर के सीमावर्ती गांवों में संचार, परिवहन और अन्य समस्याओं के समाधान के लिए केंद्र व राज्य की सरकार को उसके समाधान के निर्देश दिए है।

गृह मंत्रालय के सीमा प्रबंधन विभाग ने सामाजिक संगठन सीमाजन कल्याण समिति की जिला शाखा को पिछले दिनों भेजे गए मांग प्रतिवेदन पर कार्रवाई करते हुए उन्हें अवगत कराया गया है कि केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने सीमा क्षेत्रों में प्रायोजित राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को लेकर सीमा सुरक्षा बल एवं गृह मंत्रालय के आंतरिक सुरक्षा विभाग को कार्रवाई के निर्देश दिए है। सीमाजन कल्याण समिति के जिला मंत्री शरद व्यास ने बताया कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने समिति द्वारा भेजे गए मांग पत्र के आधार पर ही भारत माला परियोजना के तहत स्वीकृत जैसलमेर से म्याजलार तक सिंगल रोड़ के स्थान पर डबल रोड के निर्माण में आ रही डीएनपी की आपत्ति के संबंध में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय को इस संबंध में अतिशीघ्र समस्या का समाधान के निर्देश दिए है ताकि सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण सड़क का निर्माण शुरु हो सकें।

उन्होंने बताया कि पश्चिमी सीमा पर सीआईडी बीआई की बंद चौकियों को पुनः खोलने, सीमा क्षेत्रों में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए कृषि आधारित उद्योग व बिक्री केंद्र खुलवाने और पाकिस्तान से आए विस्थापितों को नागरिकता प्रदान करने के लिए भी केंद्रीय गृह मंत्रालय ने राज्य सरकार को इस संबंध में समुचित कार्रवाई का आग्रह किया है।

कभी न बनाओ किसी का मजाक

एक बूढ़ा रास्ते से कठिनता से चला जा रहा था। उस समय हवा बड़े जोरों से चल रही थी। अचानक उस बूढ़े की टोपी हवा से उड़ गई।उसके पास होकर दो लड़के स्कूल जा रहे थे।

वे लड़के उसकी बात पर ध्यान न देकर टोपी के उड़ने का मजा लेते हुए हंसने लगे। इतने में लीला नाम की एक लड़की, जो स्कूल में पढ़ती थी, उसी रास्ते पर आ पहुंची। उसने तुरंत ही दौड़कर वह टोपी पकड़ ली और अपने कपड़े से धूल झाड़कर तथा पोंछ कर उस बूढ़े को दे दी।

उसके बाद वे सब लड़के स्कूल चले गए। गुरुजी ने टोपी वाली यह घटना स्कूल की खिड़की से देखी थी। इसलिए पढ़ाई के बाद उन्होंने सब विद्यार्थियों के सामने वह टोपी वाली बात कही और लीला के काम की प्रशंसा की तथा उन दोनों लड़कों के व्यवहार पर उन्हें बहुत धिक्कारा।

इसके बाद गुरुजी ने अपने पास से एक सुंदर चित्रों की पुस्तक उस छोटी लड़की को भेंट दी और उस पर इस प्रकार लिख दिया- लीला बहन को उसके अच्छे काम के लिए गुरुजी की ओर से यह पुस्तक भेंट की गई है।

जो लड़के गरीब की टोपी उड़ती देखकर हंसे थे, वे इस घटना का देखकर बहुत लज्जित और दुखी हुए। ◆◆◆

बीरबल का रंग-रूप

एक बार अकबर बादशाह ने अपने प्रिय दरबारी बीरबल से पूछा- तुम इतने काले रंग के कैसे हो गए? बादशाह की बात में कुछ चिढ़ाने वाला पुट भरा था।

बीरबल ने कहा- जहांपनाह, जब अल्ला ताला के यहां खैरात बांटी जा रही थी तो उन्होंने सब खैरात प्राणियों के सामने रख दी। सब लोगों ने अपनी इच्छा एवं आवश्यकता के अनुसार उनमें से वस्तुएं चुन ली। झ जहांपनाह मैं बुद्धि एवं विद्या ही लेता रह गया। रूप रंग की तरु ध्यान ही नहीं गया। इसके विपरीत आप मात्र रूप रंग ही लेते रह गए। आपका ध्यान बुद्धि एवं विद्या की तरु गया ही नहीं। इस प्रकार बीरबल ने यह सिद्ध किया कि वह बुद्धिमान है, किंतु बदसूरत हैं। इसके विपरीत बादशाह खूबसूरत किंतु बेवकूफ हैं। ◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi
"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

प्रश्नोत्तरी

1. भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा के रूप में कब मान्यता प्राप्त हुई?
2. 'तुलसीदास' किस काल के कवि हैं?
3. 'कामायनी' किसकी रचना है?
4. 'क्ष' कौन-से दो व्यंजनों के मेल से बना है?
5. अग्नि का पर्यायवाची शब्द है?
6. महा ऋषि में संधि होने पर बनेगा
7. उपकार का विलोम है
8. देवनागरी लिपि किस भाषा की लिपि है?
9. 'सच्चरित्र' का संधि-विच्छेद होगा?
10. 'न रहेगा बांस न बजेबी बांसुरी' का अर्थ है?
11. 'आज्ञापान करने वाले' को कहते हैं?
12. 'मुठ्ठी गरम करना' का अर्थ है?
13. 'राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय' कहां है?
14. प्रदेश के ऊर्जा मंत्री कौन है ?
15. हिमाचल के वित्तायोग का अध्यक्ष किसे बनाया गया है?

उत्तर:. 1. 14 सितंबर 1975, 2. भक्तिकाल, 3. जयशंकर प्रसाद, 4. क्, ष, 5. हुतासन, 6. महर्षि, 7. अपकार, 8. हिंदी, 9. सत् चरित्र, 10. झगड़े को जड़ से नष्ट कर देना, 11. आज्ञाकारी, 12. घूस देना, 13. नई दिल्ली, 14. सुखराम चौधरी, 15. सतपाल सिंह सत्ती

हिमाचल फोरम द्वारा ऑनलाईन वेबिनार में प्रसिद्ध लेखक एवं स्तम्भकार डा. रत्न शारदा व डॉ. संध्या जैन अपने विचार सांझा करते हुए।

सत्संग सभा कुल्लू द्वारा प्रथम वृक्षारोपण कार्यक्रम में अध्यक्ष राकेश कोहली विभाग प्रचार प्रमुख जोगेन्द्र सिंह ठाकुर व अन्य कार्यकर्तागण..

भारतीय किसान संघ द्वारा आयोजित बैठक की अधयक्षता करते
प्रांत संगठन मंत्री व इस दौरान उपस्थित कार्यकर्तागण

कोविड–19

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाएं
आयुर्वेदिक उपाय अपनाएं

कोविड–19 महामारी की कोई दवा अभी तक नहीं बनी है। इससे बचने के लिए शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के उपाय करना ही बेहतर है। जीवन में प्राकृतिक रोग प्रतिरोधक प्रणाली की भूमिका महत्वपूर्ण है। आयुर्वेद शास्त्रों में वर्णित सरल उपायों के द्वारा व्यक्ति अपनी रोग प्रतिरोधक क्षमता को और बेहतर कर सकता है। आयुर्वेदिक उपाय अपनाएं, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं। घर पर रहें, स्वस्थ रहें।

जय राम ठाकुर
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

सामान्य उपाय

- पूरे दिन केवल गर्म पानी पिएं।
- प्रतिदिन कम से कम 30 मिनट योगासन, प्राणायाम एवं ध्यान करें।
- हल्दी, जीरा, धनिया एवं लहसुन आदि मसालों का भोजन बनाने में प्रयोग करें।

आयुर्वेदिक उपाय

- ▶ च्यवनप्राश 10 ग्राम (1 चम्मच) सुबह लें। मधुमेह रोगी शुगर फ्री च्यवनप्राश लें।
- ▶ तुलसी, दालचीनी, कालीमिर्च, शुण्ठी (सूखी अदरक) एवं मुनक्का से बनी हर्बल टी/काढ़ा दिन में एक से दो बार पिएं। स्वाद के अनुसार इसमें गुड़ या ताज़ा नींबू का रस मिला सकते हैं।
- ▶ गोल्डन मिल्क– 150 मि0ली0 गर्म दूध में आधा चम्मच हल्दी चूर्ण दिन में एक से दो बार लें।

सामान्य आयुर्वेदिक उपाय

- ▶ नस्य–सुबह एवं शाम तिल/नारियल का तेल या घी नाक के दोनों छिद्रों में लगाएं।
- ▶ कवल– 1 चम्मच तिल/नारियल तेल को मुंह में लेकर दो से तीन मिनट कुल्ले की तरह मुंह में ही घुमाएं। उसके बाद कुल्ले की तरह ही थूक दें। फिर गर्म पानी से कुल्ला कर लें। ऐसा दिन में एक से दो बार करें।

खांसी/गले में खराश के लिए

- ▶ दिन में कम से कम एक बार पुदीना के पत्ते /अजवाइन डाल कर पानी की भाप लें।
- ▶ खांसी या गले में खराश होने पर लौंग के चूर्ण में गुड़ या शहद मिलाकर दिन में दो से तीन बार लें।
- ▶ ये उपाय सामान्य सूखी खांसी एवं गले की खराश के लिए लाभदायक हैं, फिर भी यदि लक्षण बने रहते हैं तो डॉक्टर से परामर्श लें।

www.himachalpr.gov.in HimachalPradeshGovtIPRDept DPR Himachal dprhp
सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस-2 उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

Follow us on :

Posting Date :
1st & 5th of the Month